2262
शर्मा|भाल

श्री ललिता नित्यार्चन

(161)

226.2
र्मीभाल

कल्याण मन्दिर

शाक्तोपयोगी प्रकाशन

विशेष सूचना—पुस्तकें वी० पी० से नहीं भेजी जातीं। अतः पुस्तकों का मूल्य कृपया मनिआर्डर से भेजें। मूल्य में रजिस्ट्री डाकव्यय हेतु एक रुपया जोड़ दें। म० आ० मिलते ही पुस्तकें रजिस्टर्ड बुकपोस्ट से भेजी जायँगी। पत्रोत्तर के लिए कृपया सदा जवाबी कार्ड भेजें।

शाक्तधर्म पर प्रकाश डालनेवाली पुस्तकें

हिन्दी तन्त्रसार ८), हिन्दी कौलावली निर्णय ५), हिन्दी शाक्तानन्द तरंगिणी ३-५०, हिन्दी कुलार्णव २-५०, वाममार्ग ४), मंत्रसिद्धि का उपाय २), मातृ उपासना २-५०, पञ्चमकार तथा भावत्रय ४), श्रीभगवती गीता ५), श्री गायत्री तत्व विमर्श २), श्रीकाली स्वरूप तत्व २, श्रीतारा स्वरूप तत्व २), श्रीश्यामा सपर्या वासना ४-५०, श्रीकल्पद्रुम ५-५०, श्रीत्रिपुरा महोपनिषद् १-५०, मुद्राएँ एवं उपचार २), भैरवी चक्र पूजन १), मन्त्र पारायण-विधि २), श्रीनाथादि गुरुत्रयं ३-५०, साधक का संवाद ४-५०, धर्ममार्ग पर ४), मुमुक्षु मार्ग ६), धनप्राप्ति के प्रयोग १-५०, सन्तान सुख प्राप्ति के प्रयोग १), तान्त्रिक पंचांग २), शाक्त-दर्शन ३)।

साधनमाला—अष्टम वर्ष—६ मणि

श्रीललिता-नित्यार्चन

प्रकाशक

कल्याण मन्दिर, अलोपीबाग मार्ग, प्रयाग—६

तृतीय संस्करण] २०२६ [मूल्य ४), सजि० ४।।)

शाक्तोपयोगी प्रका…

विशेष सूचना—पुस्तकें बी० पी० से न…
अतः पुस्तकों का मूल्य कृपया मनिआर्डर …
रजिस्ट्री डाकव्यय हेतु एक रुपया जोड़ दें। …
पुस्तकें रजिस्टड बुकपोस्ट से भेजी जायँगी …
कृपया सदा जवाबी कार्ड भेजें।

शाक्तधर्म पर प्रकाश डालनेवा…

हिन्दी तन्त्रसार ८), हिन्दी … ५), हिन्दी शाक्तानन्द तरंगिणी ३-… र्णव २-५०, वाममार्ग ४), मंत्र… २), मातृ उपासना २-५०, पञ्चमका… ४), श्रीभगवती गीता ५), … विमर्श २), श्रीकाली स्वरूप … स्वरूप तत्व २), श्रीश्यामा स… श्रीकल्पद्रुम ५-५०, श्रीत्रिपुरा महोपनिषद् १-५०, मुद्राएँ एवं उपचार २), भैरवी चक्र पूजन १), मन्त्र पारायण-विधि २), श्रीनाथादि गुरुत्रयं ३-५०, साधक का संवाद ४-५०, धर्ममार्ग पर ४), मुमुक्षु मार्ग ६), धनप्राप्ति के प्रयोग १-५०, सन्तान सुख प्राप्ति के प्रयोग १), तान्त्रिक पंचांग २), शाक्त-दर्शन ३)।

साधनमाला—अष्टम वर्ष—६ मणि

श्रीललिता-नित्यार्चन

लेखक
श्री भद्रशील शर्मा, बी० ए०

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर, अलोपीबाग मार्ग, प्रयाग—६

तृतीय संस्करण] २०२६ [मूल्य ४), सजि० ४॥)

२२६.२
शास्त्री अ/ल

विषय-प्रवेश

प्रातःकृत्य	१-३२	बाह्यपूजा	३७-९६
स्थान-संस्कार आदि	१	सामान्यार्घ्यपात्र का स्थापन	३
द्वारपूजा	२	कलश का स्थापन	३
स्थान-शोधन	३	विशेषार्घ्यपात्र-स्थापन	४
आसन-शोधन	४	मांसादि द्रव्य-शोधन	४
संकल्प	५	श्रीपात्र-स्थपान	[illegible]
विजया ग्रहण	६	गुरु आदि पात्रों का स्थापन	५
पुष्पादि-स्थापन	७	गुरु आदि का पूजन-तर्पण	[illegible]
शरीर-शोधन	८	तत्वशुद्धि	
भूतशुद्धि	९	पराविन्दु-ग्रहण	
प्राणप्रतिष्ठा	११	यन्त्रराज की स्थापना	
करशुद्धिन्यास	११	पीठ-पूजा	
अन्तर्मातृकान्यास	१३	इष्टदेवता का आवाहन	
बहिर्मातृकान्यास	१६	इष्टदेवता का षोडशोपचार-	
सृष्टिमातृकान्यास	१६	पूजन	
स्थितिमातृकान्यास	२०	आवरण-पूजन	
संहारमातृकान्यास	२२	होम	
बालामातृकान्यास	२४	पञ्चबलि	
देवीकला मातृकान्यास	२६	पशुबलि	
श्रीबालात्रिपुरा मूलमन्त्र-न्यास	२८	नीराजन	
पीठन्यास	३१	जप-प्रक्रिया	
अन्तर्याग	३२-३७	पुष्पाञ्जलि	
१—मानसिक पूजन	३२	मण्डल-पूजन	
२—मानसिक हवन	३७	विसर्जन	

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन पहले पहल 'चक्रपूजा' के नाम से किया गया था; किन्तु दूसरे संस्करण में इसका नामकरण 'श्रीबाला नित्यार्चन' कर दिया गया; साथ में 'चक्रपूजा' नाम भी गौण रूप में रहने दिया गया, क्योंकि वास्तव में इस पुस्तक में जो पूजा-विधान दिया गया है, वही 'चक्रपूजा' या 'निशा-पूजन' के नाम से विख्यात है। साथ ही, यह नित्यार्चन भी है।

श्रीजगदम्बा की कृपा से इसका तीसरा संस्करण प्रकाशित करने का जब सुअवसर प्राप्त हुआ, तब यह विचार हुआ कि आवश्यक संशोधनों के सहित इसके अनेक संस्करण इस प्रकार प्रकाशित किए जायें कि विविध देवताओं के उपासक इस सुगम और व्यवस्थित क्रम से अर्चन कर लाभ उठा सकें। फलतः भगवती श्रीबाला, श्रीललिता, श्रीषोडशी, श्रीकमला और श्रीदुर्गा—इन पाँच देवताओं के 'नित्यार्चन' प्रकाश में आ रहे हैं। इन सभी का पूजा-क्रम एक जैसा है। केवल न्यास, ध्यान, आवरण आदि में जहाँ जैसा आवश्यक था, वैसा परिवर्तन कर दिया गया है।

पिछले संस्करणों की भूमिका में 'चक्रपूजा' या 'नित्यार्चन' पद्धति का महत्व इस प्रकार बताया है—

'चक्रपूजा' शाक्तों की सर्वश्रेष्ठ पूजा है। इसी पूजा के द्वारा शाक्त-साधक अपना इहलोक और परलोक बनाते हैं। यह उनका नित्य का अर्चन है, जिसके कुछ ही दिन के अभ्यास से वे परम तत्त्व की उपलब्धि कर लेते हैं। उनकी यह पूजा पंच-शुद्ध्यात्मक है। जिस स्थान पर शाक्त-साधक पूजन करता है, उसकी शुद्धि करने के बाद वह अपनी देह की शुद्धि करता

है। इस प्रकार देवता बन कर वह अपने हृदय में देवता का अर्चन करता है। तदुपरान्त वह देवता को बाहर लाकर उसके पूजन का आयोजन करता है। इसके लिये वह पहले पूजा-द्रव्यों का शोधन करता है, फिर देवता का और तदनन्तर इष्ट-मन्त्र का। इन पाँच शुद्धियों के द्वारा वह अपनी इस भावमयी पूजा की परिसमाप्ति करता है। ब्रह्मवादी लोग जिस प्रकार श्रवण, मनन, निदिध्यासन करके अपने लक्ष्य का साक्षात्कार करते हैं, शाक्त-साधक उसी तत्व को अपनी इस पूजा द्वारा उपलब्ध करता है।

शाक्तों की यह पूजा संस्कृत भाषा में ही लिखी मिलती है। जो लोग संस्कृत नहीं जानते हैं, उन्हें इसके करने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यही सब देख कर मैंने इसे हिन्दी में इस ढङ्ग से लिखा है कि साधारण पढ़े लिखे शाक्त-साधक इसकी सहायता से अपना नित्य का कर्म कर सकें। श्रीकुल और कालीकुल की क्रिया में कुछ अन्तर अवश्य है, पर वह इतना प्रसिद्ध है कि उसे सभी साधक जानते हैं। अतएव इस पुस्तक में कथित पूजा प्रक्रिया का दोनों कुलों के साधक अनुसरण कर सकते हैं।

प्रारम्भ में इस पूजा के करने में तीन घण्टे का समय लगता है, परन्तु कुछ दिनों के अभ्यास के बाद सारी पूजा डेढ़ घण्टे में भले प्रकार समाप्त हो जाती है। यह पूजा शाक्त लोग महानिशा में बारह बजे के बाद तीन बजे तक करते हैं। यही वह रहस्यमयी पूजा है, जिसको पूरे छः महीने तक अनवरत रूप से करने से साधक बिना किसी प्रकार की विघ्न बाधा के चतुर्वर्ग की प्राप्ति कर लेता है।

दीपावली — विनीत

संवत् २०२६ — भद्रशील शर्मा

श्री ललिता-नित्यार्चन

स्थान-संस्कार आदि

साधक पूजास्थान को गोबर से लीपे। फिर उस स्थान को वितान एवं पुष्पमालाओं से युक्त मण्डप सा सजावे तथा कई दीपकों से उसे प्रकाशमान कर धूप से सुगंधपूर्ण करे। इस प्रकार पूजास्थान को सजाकर, बाहर आकर हाथ-पैर धो स्नान तथा आचमन कर पवित्र होकर शुद्ध धोती पहन और कन्धे पर अँगौछा रख माथे में लाल चन्दन या सिन्दूर लगा तथा पान खा पूजा-गृह के द्वार पर जा नीचे लिखे मन्त्रों को पढ़ वह पापोत्सादन करे—

ॐ सूर्यः सोमो यमः कालो महाभूतानि पञ्च च।
एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः॥
देवि त्वं प्राकृतं चित्तं पापाक्रान्तमभून्मम।
तन्निःसारय चित्तान्मे पापं फट् फट् च ते नमः॥

इस प्रकार निष्पाप होकर बैठने के लिए आसन बिछा नीचे का मन्त्र पढ़कर हाथ में जल लेवे—

ॐ वज्रोदके हुँ फट् स्वाहा।

और उस जल को बिछे हुए आसन पर छिड़क कर उस पर बैठे। फिर— ॐ विशुद्धे सर्वपापानि शमयाशेष विकल्पानमनपहम्— यह मन्त्र पढ़कर हाथ-पैर धोवे। फिर ॐ ह्रीं स्वाहा—यह मन्त्र पढ़कर आचमन करे और यही मन्त्र पढ़कर शिखा बाँधे। इसके बाद सामान्यार्घ्य-पात्र का स्थापन करे। यथा—

अपने दाहने त्रिकोण, वृत्त, चतुरस्र का एक मंडल बनावे। ॐ ह्रीं आधारशक्तये नमः— इस मन्त्र से मण्डल का पूजन कर उस पर

अर्घ्यपात्र का आधार स्थापित करे। अस्त्राय फट्—इस मन्त्र से अर्घ्यपात्र को धोकर उसे आधार पर रक्खे। 'नमः'—यह मन्त्र पढ़कर पात्र में शुद्ध जल भरे। फिर—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

यह मन्त्र पढ़कर सूर्य मंडल से अंकुश-मुद्रा द्वारा तीर्थों का पात्रस्थ जल में आवाहन करे। 'ॐ'—इस मन्त्र से उस जल में गन्धादि छोड़े। 'वं'—बीज पढ़कर धेनुमुद्रा दिखाकर उसे अमृतमय करे।

द्वारपूजा

इसके बाद सामान्यार्घ्य के जल को द्वार पर छिड़क कर चन्दन-लिप्त अक्षतों और पुष्पों से द्वार-देवताओं का पूजन आगे के मन्त्रों से करे—

ॐ द्वारश्रियै नमः—ऊपर
गं गणेशाय नमः—उसकी दाहनी ओर
ॐ श्रियै नमः—उसकी बायीं ओर
धां धात्रे नमः—दाहिनी बाजू में
महालक्ष्म्यै नमः— " "
गङ्गायै नमः— " "
विं विधात्रे नमः—बायीं बाजू में
महासरस्वत्यै नमः— " "
यमुनायै नमः— " "
ॐ शंखनिधये नमः—देहली में दाहिनी ओर
ॐ पद्मनिधये नमः— " " बायीं ओर
दें देहल्यै नमः—देहली के बीच में

इस प्रकार द्वार-देवताओं का पूजन कर सामान्यार्घ्यपात्र आदि के सहित पूजागृह में प्रवेश करे। बायाँ अङ्ग सङ्कोचनपूर्वक दाहना पैर पहले उठाकर गृह में जाय।

स्थान-शोधन

भीतर जाकर हाथ में सरसों, तिल और अक्षत लेकर नीचे लिखे मन्त्र पढ़ स्थान-शोधन के लिए भूतापसर्पण करे—

ॐ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥
अपसर्पन्तु भूतानि पिशाचाः प्रेत-राक्षसाः।
ये चात्र निवसन्त्यन्ये देवताः भुवि संस्थिताः ॥
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्न-कर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

मंत्र पढ़ चुकने पर उन सबको चारों ओर बिखेर दे।

इसके बाद—मूल-मंत्र के अन्त में 'फट्' जोड़कर पढ़े और बायें पैर की एँड़ी से भूमि पर तीन बार आघात कर भूमि के विघ्नों को, ऊपर को हाथ उठाते हुए तीन बार फट्कार कर अंतरिक्ष के विघ्नों को और दिव्य दृष्टि से अर्थात् एकटक इधर-उधर देखकर दिव्य विघ्नों को उस स्थान से हटा दे।

इसके बाद अपने साथ लाये हुए सामान्य-अर्घ्य के कुछ जल को पूजाघर में छिड़क दे। फिर ईशान कोण में ॐ ऐं ह्रीं श्रीं द्वादश-शक्ति-युक्ताय दीप-नाथाय नमः—इस मन्त्र से दीपनाथ को एक पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

तदनन्तर—ॐ रं अग्नि-प्राकाराय नमः, ॐ सहस्रार हुँ फट् सुदर्शन-प्राकाराय नमः, ॐ श्लीं पशुं हुँ फट् पशुपत-प्राका-

राय नमः——ये तीन मन्त्र पढ़कर छोटिकामुद्रा से अर्थात् चुटकी बजाकर अपने चारों ओर उक्त तीन प्राकारों की रचना करे।

इसके बाद—

ॐ तीक्ष्ण-दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त-दहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि॥

यह मन्त्र पढ़ भैरव से देवता का पूजन करने की आज्ञा प्राप्त करे।

आसन-शोधन

तदनन्तर पूजास्थान पर हाथ रखकर—

ॐ पवित्र-वज्र-भूमे हुँ फट् स्वाहा—यह मन्त्र पढ़कर भूमि को अभिमंत्रित करे।

फिर—

ॐ आः सुरेखे वज्ररेखे हुँ फट् स्वाहा—इस मन्त्र से सामान्यार्घ्य* के जल से उस पूजास्थान में एक त्रिकोण बनावे और उसके भीतर 'ह्सौः'—यह प्रेतबीज लिखे।

* यदि पूजा-गृह के द्वार पर सामान्य-अर्घ्य न स्थापित किया गया हो तो पहले जल को शुद्ध कर ले, तब उसका उपयोग करे। जलपात्र को अपने दाहने रख जल का शोधन करे। दाहने हाथ के ऊपर बायाँ हाथ रख यं वायुबीज से उसके दोषों का शोषण करे, बायें हाथ पर दाहना हाथ रख रं अग्निबीज से उसका दहन करे, वं वरुण बीज से उसका आप्लावन करे, मूल-मन्त्र से जल-द्वारा उसका प्रोक्षण करे, धेनुमुद्रा से उसे अमृतमय करे। इस प्रकार जल का शोधन कर उसके द्वारा पूजन-क्रिया करे।

इसके बाद—

ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः—इस मन्त्र से आसन का पूजन करे और तब उसे त्रिकोण बने पूजा-स्थान में बिछा दे।

तदनन्तर आसन पर हाथ रखकर—

अस्य श्रीआसन-शोधन-मंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः—यह विनियोग पढ़े और प्रार्थना करे—

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

इसके बाद आसन पर बैठे और नीचे के मन्त्रों से चार बार आचमन करे—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क-५ आत्मतत्त्वाय स्वाहा।
४ क्लीं ह-६ विद्यातत्त्वाय स्वाहा॥
४ सौः स-४ शिवतत्त्वाय स्वाहा।
४ ऐं क-५ क्लीं ह-६ सौः स-४ सर्वतत्त्वाय स्वाहा॥

संकल्प

इस प्रकार आचमन कर पूजा का संकल्प हाथ में जल लेकर पढ़े। यथा—

ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्वेतवराह-कल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तदेशे पुण्यक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुक-तिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रो अमकशर्माहं श्री त्रिपुर-सुंदरी देवताप्रीत्यर्थं यथासंभवद्रव्यैः यथाशक्ति यजनं करिष्ये।

इसके बाद योनिमुद्रा से बाएँ कंधे पर—गुं गुरुभ्यो नमः—से गुरुदेवों को, दाहने कन्धे पर—गं गणेशाय नमः—इस मन्त्र से

गणेश को और हृदय में— श्री त्रिपुरसुन्दर्यै नमः—इस मन्त्र से इष्टदेवता को प्रणाम करे।

विजया-ग्रहण

तदनन्तर विजया का स्वीकार करे। यथा—

संविद्-पात्र को सामने आधार पर रखकर हाथ जोड़कर— ॐ अस्य संविद्मंत्रस्य दक्षिणामूर्तिऋषिः पंक्तिश्छंदः सदाशिवो देवता संवित्सान्निध्यारोपणे विनियोगः—यह विनियोग पढ़े। फिर संवित् देवी का ध्यान करे। यथा—

ॐ सिद्धाढ्यां शिव-मोहिनीं कर-लसत्पाशांकुशां भैरवीं।
भक्ताभीष्ट-फल-प्रदां सुकुशलां संसार-बन्ध-च्छिदम्॥
पीयूषाम्बुधि-मथनोद्भव-रसां संविद्विलासास्पदां।
वीराराधित-पादुकां सुविजयां ध्यायेज्जगन्मोहिनीम्॥

फिर—

ॐ संविदे ब्रह्म-सम्भूते ब्रह्म-पुत्रि सदानघे।
भैरवानां च तृप्त्यर्थं पवित्रा भव सर्वदा॥ ॐ ब्रह्मण्यै नमः स्वाहा।

ॐ सिद्धि-मूल-क्रिये देवि हीन-बोध-प्रबोधिनि।
राज-प्रजा-वशं-करि शत्रु-कण्ठ-त्रिशूलिनि॥ ऐं क्षत्रियायै नमः स्वाहा।

ॐ अज्ञानेन्धन-दीप्ताग्ने ज्ञान-रूपिणि।
आनन्दस्याहुतिं प्रीतिं सम्यक् ज्ञानं प्रयच्छ मे॥ ह्रीं वैश्यायै नमः स्वाहा।

ॐ नमस्यामि नमस्यामि योग-मार्ग-प्रदर्शिनि।
त्रैलोक्य-विजये मातः समाधि-फलदा भव॥ क्लीं शूद्रायै नमः स्वाहा।

इन चारों मन्त्रों को पात्र के ऊपर हाथ रखकर पढ़े और उसे शुद्ध करे।

फिर—

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतमाकर्षय आकर्षय अमृतं कुरु कुरु स्वाहा—यह मन्त्र पढ़कर धेनुमुद्रा से उसे अमृतमय करे।

इसके बाद—'यं' वायुबीज से दोष-शोषण, 'रं' अग्निबीज से दोष-दहन और 'वं' वरुणबीज से धेनुमुद्रा द्वारा अमृतमय करे। फिर योनि-मुद्रा से नमस्कार कर मत्स्यमुद्रा से उस पर आठ बार मूलमन्त्र का जप करे।

तदनन्तर पुनः ध्यान करे। यथा—

ॐ संविद् देवि गरीयसी गुणमयी वैगुण्य-विध्वंसिनी।
मायामोह-महान्धकार-शमनी ताप-त्रयोन्मूलिनी॥
वन्दे वीरमुखाम्बुजे विलसिनी संदीपनी दीपिका।
ब्रह्म-ज्ञान-मयी विवेक-जनिका विज्ञान-मूर्त्यै नमः॥

फिर—

ॐ वद् वद् वाग्वादिनि मम जिह्वाग्रे स्थिरी भव सर्वसत्त्वं वशंकरि स्वाहा।

यह मन्त्र पढ़कर भावना-द्वारा विजया को कुण्डलिनी के मुख में अर्पित कर दे।

पुष्पादि स्थापन

इसके बाद सामान्यार्घ्य के जल से अपने को तथा पूजा के उपकरणों को प्रोक्षित करे। तब अपनी दाहिनी ओर पुष्प आदि, अपने पृष्ठभाग में हाथ धोने के लिए पात्र और अपनी बायीं ओर

पूजा के द्रव्य स्थापित करे। इसके बाद अपने सामने कुछ दूरी पर यंत्रराज की स्थापना के लिए चौकी या सिंहासन रखे। उसके दक्षिण में तेल का और वाम में घी का दीपक जलाकर स्थापित करे।

फिर—ॐ पुष्पकेतु राजार्हं ते शताय सम्यक् संबद्धाय। ॐ पुष्पे पुष्पे सुपुष्पे महापुष्पे पुष्प-सम्भवे। पुष्पं यवावकीर्णो हुँ फट् स्वाहा—यह मन्त्र पढ़कर पुष्पों का शोधन करे।

फिर—ॐ ह्रीं हूँ फट् यह मन्त्र पढ़कर नाराच मुद्रा और समदृष्टि से गन्धादि सामग्री का शोधन करे।

इसके बाद—'रं' अग्निबीज को पढ़कर दीपक की लौ का स्पर्श करे।

फिर—ॐ हुँ फट् स्वाहा—यह मन्त्र पढ़कर काय, वाणी और चित्त को शुद्ध करे।

इसके बाद हृदय पर हाथ रखकर—रक्ष रक्ष हुँ फट् स्वाहा—यह मन्त्र पढ़कर अपनी रक्षा करे।

तदनन्तर चन्दन लगे हुए फूल हाथ में लेकर उन्हें मींज कर बायें हाथ में लेकर सूँघे और—

ॐ ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः।
मृत्यु-रोग-भय-क्लेशाः पतन्तु रिपुमस्तके॥

यह मन्त्र पढ़कर उन्हें ईशान कोण में दूर फेंक दे।

इसके बाद—ॐ ऐं ऐं क्लीं ह्रीं त्रिपुरे भगवति स्वाहा—इस कुल्लुका मन्त्र का मूर्ध्नि में चिन्तन करे।

इसके बाद शरीर-शोधन के लिए प्राणायाम करे।

शरीर-शोधन

प्राणायाम मूलमन्त्र के तीन कूटों (से क-५ के १६ बार जप से पूरक, ह-६ के ६४ बार जप से कुम्भक, स-४ के ३२ बारजप से रेचक) या प्रणव से करे। प्रणव से इस प्रकार करे—

१६ बार प्रणव का जप करता हुआ बायीं नासिका से धीरे-धीरे वायु भीतर खींचे और दाहने अँगूठे से दाहनी नासिका को बन्द किये रहे।

फिर ६४ बार प्रणव का जप करता हुआ उस वायु को भीतर भरे रहे। इस समय बायीं नासिका को भी दाहनी अनामिका और कनिष्ठा से बन्द किये रहे।

फिर ३२ बार प्रणव का जप करता हुआ उस भरी हुई वायु को दाहनी नासिका से धीरे-धीरे बाहर निकाले। इस समय वायु निकलने के लिए उस पर से दाहना अँगूठा हटा ले।

यह एक प्राणायाम हुआ। यही क्रिया तीन बार करने से पूरा प्राणायाम होता है। पहले प्राणायाम में बायीं नासिका से वायु खींची जाती है और दाहनी से छोड़ी जाती है, दूसरे में दाहनी से खींची जाती है और बायीं से छोड़ी जाती है और तीसरे में फिर बायीं से खींची जाती है और दाहनी से छोड़ी जाती है। प्रणव की जपसंख्या का क्रम शेष दोनों पहले जैसा ही रहता है।

प्राणायाम के बाद शरीर की विशेष शुद्धि के लिए भूतशुद्धि करे।

भूतशुद्धि

'हुँ' बीज का उच्चारण कर मूलाधार चक्र से कुण्डलिनी को उठावे। हृदयस्थ जीवात्मा से कुण्डलनी को संयुक्त कर सुषुम्ना नाड़ी के मार्ग से ले जाकर सहस्रार की कर्णिका में परमात्मा से उन्हें 'हंसः'—यह मन्त्र पढ़कर संयुक्त करे। फिर परमात्मा को ऐसा समझे कि उसमें चौबीसों तत्त्व लीन हैं।

तदनन्तर बाईं कोख में पाप पुरुष का ध्यान इस प्रकार करे—

वाम-कुक्षि-स्थितं कृष्णमंगुष्ठ-परिमाणकं।
विप्रहत्या-शिरोयुक्तं कनकस्तेय-बाहुकम्॥

मदिरा-पान-हृदयं गुरु-तल्प-कटीयुतम् ।
तत्संयोगि पद-द्वन्द्वमुपपातक-रोमकम् ॥
खड्ग-चर्म-धरं दुष्टमधोवक्त्रं च दुःसहम् ।

इसके बाद 'यं' बीज को १६ बार जपता हुआ बायीं नासिका से वायु को भीतर खींचे और उसे बायीं कोख में ले जाकर वहाँ पर स्थित पाप पुरुष का उससे शोषण करे। इस समय दाहिनी नासिका को दाहने अँगूठे से बन्द किये रहे। इसके बाद 'रं' अग्निबीज को ६४ बार जपता हुआ उस वायु को भीतर भरे रहे और यह समझे कि उस वायु से पाप पुरुष सहित सारी देह जल गई है। तदनन्तर 'यं' वायुबीज को ३२ बार जपता हुआ उस वायु को दाहनी नासिका से बाहर निकाल दे और यह समझे कि जले हुए पापपुरुष की देह की सारी राख उसके साथ बाहर निकल गई है। इस समय बायीं नासिका को अनामा और कनिष्ठा से बन्द किये रहे। 'वं' सुधाबीज को १६ बार जपता हुआ ललाट में स्थित चन्द्रमा के अमृत की वृष्टि करावे और यह समझे कि उस अमृतवृष्टि से वह भस्मीभूत शरीर पुनः सावयव होकर पहले जैसा ही अस्तित्व में आ गया है। अब लं' पृथ्वीबीज को १६ बार जपे और यह समझे कि वह देह पूर्ववत् सुदृढ़ हो गई है। इसके बाद 'सोऽहं' इस मन्त्र का उच्चारण कर परमात्मा से युक्त जीवात्मा और कुण्डलनी को उसी मार्ग से ले जाकर हृदय-कमल में जीवात्मा को और कुण्डलनी को मूलाधार चक्र में स्थापित करे। इस प्रकार अपनी आत्मा को प्रपञ्चों से परे समझे*।

इस प्रकार देह की शुद्धि कर लेलिहानीमुद्रा से अपने हृदय के दशदल के कमल में इष्टदेवता की प्राणप्रतिष्ठा करे।

---

* यदि भूतशुद्धि करने में असमर्थ हो, तो 'ॐ ह्रौं'—इस मन्त्र का १०८ बार जप कर अपने शरीर की शुद्धि करे।

प्राणप्रतिष्ठा *

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षसं ह्रौं हंसः श्रीललिता देवतायाः प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं र लं वं शं षं स ह्रौं हंसः श्रीललितायाः जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल वं शं ष स ह्रौं हंसः श्रीललितायाः सर्वेन्द्रियाणि। ॐ आं ह्रीं क्रों यं र लं वं शं षं सं ह्रौं हंसः श्रीललितायाः वाङ्मनो चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणपदानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इस मन्त्र को तीन बार पढ़े और यह समझे कि देवता अपने साकार रूप में उसके हृदय में स्थित हो गया है।

करशुद्धि-न्यास

इसके बाद न्यासक्रिया के लिए अँगुलियों की शुद्धि के लिए करशुद्धि-न्यास करे। यथा—

ॐ अं नमः दक्ष करतले।
ॐ आं नमः वाम करतले।
ॐ इं नमः दक्ष करपृष्ठे।
ॐ ईं नमः वाम करपृष्ठे।
ॐ उं नमः दक्ष करतले।
ॐ ऊं नमः वाम करतले।
ॐ ऋं नमः दक्ष अंगुष्ठे।
ॐ ॠं नमः दक्ष तर्जन्यां।
ॐ लृं नमः दक्ष मध्यमायाम्।

---

* अन्यत्र प्राणप्रतिष्ठा का मन्त्र भिन्न है, जिसमें अपने प्राणों की प्रतिष्ठा की विधि है। वह मन्त्र ऊपर जैसा ही है केवल देवता के प्राण के स्थान में 'मम प्राणाः' का उल्लेख किया जाता है।

ॐ लृं नमः दक्ष अनामायाम् ।
ॐ एं नमः दक्ष कनिष्ठायाम् ।
ॐ ऐं नमः वाम कनिष्ठायाम् ।
ॐ ओं नमः वाम अनामायाम् ।
ॐ औं नमः वाम मध्यमायाम् ।
ॐ अं नमः वाम तर्जन्याम् ।
ॐ अः नमः वाम अंगुष्ठे ।
ॐ कं नमः वाम तर्जनी प्रथम पर्वे ।
ॐ खं नमः वाम तर्जनी मध्य पर्वे ।
ॐ गं नमः वाम तर्जनी तृतीय पर्वे ।
ॐ घं नमः वाम तर्जनी अग्रे ।
ॐ ङं नमः वाम मध्यमा प्रथम पर्वे ।
ॐ चं नमः वाम मध्यमा द्वितीय पर्वे ।
ॐ छं नमः वाम मध्यमा तृतीय पर्वे ।
ॐ जं नमः वाम मध्यमा अग्रे ।
ॐ झं नमः वाम अनामा प्रथम पर्वे ।
ॐ ञं नमः वाम अनामा द्वितीय पर्वे ।
ॐ टं नमः वाम अनामा तृतीय पर्वे ।
ॐ ठं नमः वाम अनामा अग्रे ।
ॐ डं नमः वाम कनिष्ठा प्रथम पर्वे ।
ॐ ढ नमः वाम कनिष्ठा द्वितीय पर्वे ।
ॐ णं नमः वाम कनिष्ठा तृतीय पर्वे ।
ॐ तं नमः वाम कनिष्ठा अग्रे ।
ॐ थं नमः दक्ष कनिष्ठा प्रथम पर्वे ।
ॐ दं नमः दक्ष कनिष्ठा द्वितीय पर्वे ।
ॐ धं नमः दक्ष कनिष्ठा तृतीय पर्वे ।

ॐ नं नमः दक्ष कनिष्ठा अग्रे ।
ॐ प नमः दक्ष अनामा प्रथम पर्वे ।
ॐ फं नमः दक्ष अनामा द्वितीय पर्वे ।
ॐ बं नमः दक्ष अनामा तृतीय पर्वे ।
ॐ भं नमः दक्ष अनामा अग्रे ।
ॐ मं नमः दक्ष मध्यमा प्रथम पर्वे ।
ॐ यं नमः दक्ष मध्यमा द्वितीय पर्वे ।
ॐ रं नमः दक्ष मध्यमा तृतीय पर्वे ।
ॐ लं नमः दक्ष मध्यमा अग्रे ।
ॐ वं नमः दक्ष तर्जनी प्रथम पर्वे ।
ॐ शं नमः दक्ष तर्जनी द्वितीय पर्वे ।
ॐ षं नमः दक्ष तर्जनीतृतीय पर्वे ।
ॐ सं नमः दक्ष तर्जनी अग्रे ।
ॐ हं नमः दक्ष अंगुष्ठे ।
ॐ ळं नमः वाम अंगुष्ठे ।
ॐ क्षं नमः सर्वाङ्गे ।

अन्तर्मातृकान्यास

इसके बाद मातृकान्यास करे । पहले अन्तर्मातृकान्यास करे । यथा—

विनियोग

अस्य अन्तर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः मातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं श्रीललिता-पूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये अन्तर्मातृकान्यासे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास

अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि ।

इं गायत्री छन्दसे नमः ईं मुखे ।

उं सरस्वती देवतायै नमः ऊं हृदये ।

एं हलेभ्यो वीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये ।

ओं स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः ।

अं अव्यक्तकीलकाय नमः अः नाभौ ।

श्रीललिता-पूजांगत्वेन देवभावाप्तये अन्तर्मातृकान्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

प्राणायाम

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः इन स्वरों से पूरक । कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं इन व्यञ्जनों से कुम्भक और यं रं लं वं शं षं सं हं इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करे ।

करन्यास

अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्या नमः ।

उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः ।

एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः ।

ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

षडङ्गन्यास

अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः ।

इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा ।

उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट् ।

एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुं ।

ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट् ।

अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतल-करपृष्ठाभ्यां फट् ।

ध्यान

आधारे लिंग-नाभौ प्रकटित-हृदये तालु-मूले ललाटे ।
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश-दशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के ॥
वासान्ते बालमध्ये डफकठ-सहिते कण्ठदेशे स्वराणाम् ।
हक्षौ तत्त्वार्थचिन्त्यं सकल-दलगतं वर्णरूपं नमामि ॥
शारत्पूर्णेन्दु-शुभ्रां सकल-लिपि-मयीं लाल-रक्त-त्रिनेत्राम् ।
शुक्लालंकार-भासां शशि-मुकुट-जटाभार-हार-प्रदीप्ताम् ॥
विद्या-स्रक्-पूर्ण-कुम्भान् वरमपि दधतीं शुद्ध-पट्टाभिराढ्याम् ।
वाग्देवीं पद्मपत्रां कुचभर-नमितां चिन्तयेत् साधकेन्द्रः ॥

यह अन्तर्मातृकान्यास मेरुदण्ड में स्थित छहों चक्रों में करे । यथा—

न्यास

कण्ठे धूम्रवर्णे षोडशदले विशुद्धे—ॐ अं नमः । ॐ आं नमः । ॐ इं नमः । ॐ ईं नमः । ॐ उं नमः । ॐ ऊं नमः । ॐ ऋं नमः । ॐ ॠं नमः । ॐ लृं नमः । लॄं नमः । ॐ एं नमः । ॐ ऐं नमः । ॐ ओं नमः । ॐ औं नमः । ॐ अं नमः । ॐ अः नमः ।

हृदये रक्तवर्णे द्वादशदले अनाहते—ॐ कं नमः । ॐ खं नमः । ॐ गं नमः । ॐ घं नमः । ॐ ङं नमः । ॐ चं नमः । ॐ छं नमः । ॐ जं नमः । ॐ झं नमः । ॐ ञं नमः । ॐ टं नमः । ॐ ठं नमः ।

नाभौ मेघवर्णे दशदले मणिपूरे—ॐ डं नमः। ॐ ढं नमः। ॐ णं नमः। ॐ तं नमः। ॐ थं नमः। ॐ दं नमः। ॐ धं नमः। ॐ नं नमः। ॐ पं नमः। ॐ फं नमः।

लिंगमूले विद्युद्वर्णे षट्दले स्वाधिष्ठाने—ॐ बं नमः। ॐ भं नमः। ॐ मं नमः। ॐ यं नमः। ॐ रं नमः। ॐ लं नमः।

सुवर्णवर्णे चतुर्दले मूलाधारे—ॐ वं नमः। ॐ शं नमः। ॐ षं नमः। ॐ सं नमः।

भ्रूमध्ये श्वेतवर्णे द्विदले आज्ञाचक्रे—ॐ हं नमः। ॐ क्षं नमः।

बहिर्मातृकान्यास *

इसके बाद बहिर्मातृकान्यास करे। पहले सृष्टिमातृकान्यास करे। यथा—

सृष्टिमातृकान्यास

विनियोग

अस्य बहिर्मातृकान्यासे सृष्टिमातृकान्यासमंत्रस्य ब्रह्म-ऋषिः गायत्री छन्दः सृष्टिमातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं श्रीललितापूजाङ्ग-त्वेन देवभावाप्तये सृष्टिमातृकान्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि।
गायत्री छन्दसे नमः मुखे।
सृष्टिमातृका सरस्वती देवतायै नमः हृदि।
हलेभ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये।

* बहिर्मातृकान्यास सृष्टि, स्थिति और संहार के क्रम से तीन प्रकार का होता है। यह न्यास ब्रह्मचारी सृष्टिन्यास से प्रारम्भ करते हैं परन्तु गृहस्थ संहारक्रम से न्यास करते हैं।

स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः पादयोः।

अव्यक्तकीलकाय नमः नाभौ।

श्रीत्रिपुरसुन्दरी-पूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये सृष्टिमातृकान्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

प्राणायाम

'अं····अः' इन स्वरों से पूरक। 'क····मं' इन व्यञ्जनों से कुम्भक और 'यं····क्षं' इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करे।

करन्यास

अं कं····ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं····ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः। उं टं····णं ऊं मध्यमाभ्यां वषट्। एं तं····नं ऐं अनामिकाभ्यां हुँ। ओं पं····मं औं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। अं यं····क्षं अः करतल-करपृष्ठाभ्यो फट्।

षडङ्गन्यास

अं कं····ङं आं हृदयाय नमः। इं चं····ञं ईं शिरसे स्वाहा। उं टं····णं ऊं शिखायै वषट्। एं तं····नं ऐं कवचाय हुं। ओं पं····मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्। अं यं····क्षं अः अस्त्राय फट्।

ध्यान

अर्द्धोन्मुक्त-शशांक-कोटिसदृशीमापीन-तुङ्गस्तनीम्।
चन्द्रार्द्धाङ्कितशेखरां मधुदलैरालोलनेत्रत्रयाम्॥
बिभ्राणामनिशं वरं जपवटीं शूलं कपालं करैः।
आद्यां यौवनगर्वितां लिपितनुं वागीश्वरीमाश्रये॥

न्यास

अं नमः ललाटे—मध्यमा + अनामिका
आं " मुखवृत्ते—तर्जनी + मध्यमा + अनामिका

इं नमः दक्ष नेत्रे—अंगूठा (तर्जनी वा) + अनामिका
ईं " वाम नेत्रे —,, ,,
उं " दक्षकर्णे—,, ,,
ऊं " वाम कर्णे—,, ,,
ऋं " दक्ष नासायाम्—अंगूठा + कनिष्ठा
ॠं " वाम नासायाम् ,, ,,
लृं " दक्ष गण्डे—तर्ज + मध्य+ अना० / केवल मध्यमा वा
ॡं " वामगण्डे ,, ,, ,,
एं " ऊर्ध्व ओष्ठे—मध्यमा
ऐं " अधो ओष्ठे ,,
ओं " ऊर्ध्व दंतपंक्तौ—अनामिका
औं " अधो दतपंक्तौ ,,
अं " शिरसि—मध्यमा
अः नमः मुखे—अनामिका (अनामिका + मध्यमा वा)
कं " दक्षबाहुमूले—मध्यमा + अनामिका + कनि०
खं " दक्ष कूर्परे ,, ,,
गं " दक्ष मणिबन्धे ,, ,,
घं " दक्षकरतले ,, ,,
ङं " दक्ष कराग्रे ,, ,,
चं " वाम बाहुमूले—कनिष्ठा + अनामिका + मध्यमा
छं " वाम कूर्परे ,, ,,
जं " वाम मणिबन्धे ,, ,,
झं " वाम करतले ,, ,,
ञं " वाम कराग्रे ,, ,,
टं " दक्षोरु मूले ,, ,,
ठं " दक्ष जानुनि ,, ,,

डं " दक्ष गुल्फे—कनिष्ठा+अनामिका+मध्यमा
ढं " दक्ष पादतले ,, ,,
णं " दक्ष पादाग्रे ,, ,,
तं " वामोरु मूले ,, ,,
थं " वाम जानुनि ,, ,,
दं " वाम गुल्फे ,, ,, ,,
धं " वाम पादतले ,, ,, ,,
नं " वाम पादाग्रे—कनिष्ठा + अनामिका + मध्यमा
पं " दक्ष पार्श्वे ,, ,, ,,
फं " वाम पार्श्वे ,, ,, ,,
बं " पृष्ठे ,, ,, ,,
भ " नाभौ—अंगुष्ठ + कनिष्ठा + अनामिका + मध्यमा
मं नमः जठरे-अंगुष्ठ+तर्जनी+मध्यमा+अनामिका+कनिष्ठा
यं त्वगात्मने नमः हृदि ,, ,,
रं असृगात्मने " दक्षांसे ,, ,,
लं मांसात्मने " ककुदि ,, ,,
वं मेदात्मने " वामांशे ,, ,,
शं अस्थ्यात्मने " हृदादि दक्ष करांगुल्यन्तम्।
षं मज्जात्मने " हृदादि वाम करांगुल्यन्तम्।
सं शुक्रात्मने " नाभ्यादि दक्ष पादान्तम्।
हं जीवात्मने " नाभ्यादि वाम पादान्तम्।
ळं परमात्मने " हृदादि कुक्षौ।
क्षं ज्ञानात्मने " हृदादि मुखे।

अब स्थितिमातृकान्यास करे। यथा—

स्थितिमातृकान्यास

विनियोग

अस्य बहिर्मातृकान्यासे स्थितिमातृकान्यासमन्त्रस्य विष्णु ऋषिः गायत्री छन्दः स्थितिमातृकासरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं श्रीत्रिपुरसुन्दरी-पूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये स्थितिमातृकान्यासे विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यास

विष्णवे ऋषये नमः शिरसि । गायत्री छन्दसे नमः मुखे । स्थितिमातृकासरस्वतीदेवतायै नमः हृदि । हलो बीजाय नमः गुह्ये । स्वराः शक्तये नमः पादयोः । अव्यक्तकीलकाय नमः नाभौ । श्रीत्रिपुरसुन्दरी-पूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये स्थितिमातृकान्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

'अं....अः' इन स्वरों से पूरक । 'कं ...मं इन व्यञ्जनों से कुम्भक । 'यं ...क्षं' इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करे ।

करन्यास

अं कं....ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः । इं चं....ञं ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा । उं टं....णं ऊं मध्यमाभ्यां वषट् । एं तं....नं ऐं अनामिकाभ्यां हुं । ओं पं....मं औं कनिष्ठाभ्यां वौषट् । अं यं....क्षं अः करतल-करपृष्ठाभ्यां फट् ।

षडङ्गन्यास

अं कं....ङं आं हृदयाय नमः । इं चं....ञं ईं शिरसे स्वाहा । उं टं....णं ऊं शिखायै वषट् । एं तं....नं ऐं कवचाय हुं । ओं पं....मं औं नेत्रत्रयाय वौषट् । अं यं....क्षं अः अस्त्राय फट् ।

ध्यान

पद्मीन्द्रासनसंस्थितां भगवतीं श्यामां पिशंगावृताम् ।
शखं चक्रगदाब्जपाशसृणिभिर्मालां दधानां । पराम् ॥
विद्याभीतिवरप्रदां त्रिनयनामापीनतुङ्गस्तनीम् ।
देवीं विष्णुमयीं समस्तजननीं ध्यायामि तामम्बिकाम् ॥

न्यास

डं नमः दक्ष गुल्फे । ढं नमः दक्ष पादांगुलिमूले । णं नमः दक्ष पादांगुल्यग्रे । तं नमः वामोरु मूले । थं नमः वाम जानुनि । दं नमः वाम गुल्फे । धं नमः वाम पादांगुलिमूले । नं नमः वाम पादांगुल्यग्रे । पं नमः दक्ष पार्श्वे । फं नमः वाम पार्श्वे । बं नमः पृष्ठे । भं नमः नाभौ । मं नमः जठरे । यं त्वगात्मने नमः हृदि । रं असृगात्मने नमः दक्षांशे । लं मांसात्मने नमः ककुदि । वं मेदात्मने नमः वामांशे । शं अस्थ्यात्मने नमः हृदादि दक्षकरान्तम् । षं मज्जात्मने नमः हृदादि वाम करान्तम् । सं शुक्रात्मने नमः नाभ्यादि दक्षं पादान्तम् । हं जीवात्मने नमः नाभ्यादि वामपादान्तम् । ळं परमात्मने नमः हृदादि कुक्षौ । क्षं ज्ञानात्मने नमः हृदादिमुखे । अं नमः ललाटे । आं नमः मुखवृत्ते । इं नमः दक्ष नेत्रे । ईं नमः वाम नेत्रे । उं नमः दक्ष कर्णे । ऊं नमः वाम कर्णे । ऋं नमः दक्ष नासायाम् । ॠं नमः वाम नासायाम् । ऌं नमः दक्ष गण्डे । ॡं नमः वाम गण्डे । एं नमः ऊर्ध्व ओष्ठे । ऐं नमः अधो ओष्ठे । ओं नमः ऊर्ध्व दंतपंक्तौ । औं नमः अधो दंतपंक्तौ । अं नमः शिरसि । अः नमः मुखे । कं नमः दक्ष बाहुमूले । खं नमः दक्ष कूर्परे । गं नमः दक्ष मणिबन्धे । घं नमः दक्ष करांगुलि-मूले । ङं नमः दक्ष करांगुल्यग्रे । चं नमः वाम बाहुमूले । छं नमः वाम कूर्परे । जं नमः वाम मणिबन्धे । झं नमः वाम

करतले। ञं नमः वाम करांगुल्यग्रे। टं नमः दक्षोरु मूले। ठं नमः दक्ष जानुनि।

इसके बाद संहारमातृका न्यास करे। यथा—

संहारमातृकान्यास

विनियोग

अस्य बहिर्मातृकान्यासे संहारमातृकान्यासमन्त्रस्य रुद्र ऋषिः गायत्री छन्दः संहारमातृका सरस्वती देवता मं इत्यारभ्य कं इति अन्त हलानि बीजानि अः आरभ्य अं इति अंतं स्वराः शक्तयः क्षं इति आरभ्य यं इति पर्यन्तः व्यञ्जनानि कीलकं श्रीत्रिपुरसुन्दरी पूजाङ्गत्वेन देवभावाप्तये संहारमातृकान्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यास

रुद्र ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमः मुखे। संहार-मातृकासरस्वती-देवतायै नमः हृदि। मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं बीजाय नमः गुह्ये। अः अं औं ओं ऐं एं ॡं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं शक्तये नमः पादयोः। क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं कीलकाय नमः नाभौ। श्रीत्रिपुरसुन्दरी-पूजांगत्वेन देवभावाप्तये संहारमातृकान्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

प्राणायाम

'अं....अः' इन स्वरों से पूरक। 'कं....मं' इन व्यञ्जनों से कुम्भक और 'यं....क्षं' इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करे।

षडङ्गन्यास

अः क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं अं अस्त्राय फट्। औं मं भं बं फं पं ओं नेत्रत्रयाय वौषट्। ऐं नं धं दं थं तं एं कवचाय हुँ। ऊं णं ढं डं ठं टं उं शिखायै वषट्।

ईं ञं झं जं छं चं इं शिरसे स्वाहा। आं ङं घं गं खं चं अं हृदयाय नमः।

करन्यास

अः क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं अं करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्। औं मं भं बं फं पं ओं नेत्रत्रयाय वौषट्। ऐं नं धं दं थं तं एं अनामिकाभ्यां हुँ। ऊं णं ढं डं ठं टं उं मध्यमाभ्यां वषट्। ईं ञं झं जं छं चं इं तर्जनीभ्यां स्वाहा। आं ङं घं गं खं कं अं अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ध्यान

धूम्रांगीं मुक्तकेशीं शशिमलिनमुखीं घोररूपां त्रिनेत्राम्।
व्यस्तैर्हस्तैर्दधानां व्यजनकरधृतां दीप्तमग्निं वहाहाम्।
हाहाकाराट्टहासामभयवरकरां ज्वालयन्तीं दिशाश्च।
भक्तेभ्यः प्रेमबद्धां दिशतु प्रतिदिनं भारतीं तां नमामि॥

न्यास

क्षं ज्ञानात्मने नमः ललाटे। लं परमात्मने नमः मुखवृत्ते। हं जीवात्मने नमः दक्ष नेत्रे। सं शुक्रात्मने नमः वाम नेत्रे। षं मज्जात्मने नमः दक्ष कर्णे। श अस्थ्यात्मने नमः वाम कर्णे। वं मेदात्मने नमः दक्ष नासायाम्। लं मांसात्मने नमः वाम नासायाम्। रं असृगात्मने नमः दक्ष गंडे। यं त्वगात्मने नमः वाम गंडे। मं नमः ऊर्ध्व ओष्ठे। भं नमः अधर ओष्ठे। बं नमः ऊर्ध्वे दंतपंक्तौ। फं नमः अधो दंतपंक्तौ। पं नमः शिरसि। नं नमः मुखे। धं नमः दक्ष बाहुमूले। दं नमः दक्ष कूर्परे। थं नमः दक्ष मणिबन्धे। तं नमः दक्ष करांगुलिमूले। णं नमः दक्ष करांगुल्यग्रे। ढं नमः वामबाहुमूले। डं नमः वाम कूर्परे। ठं नमः वाम मणिबन्धे। टं नमः वाम करांगुलिमूले। ञं नमः वाम करांगुल्यग्रे। झं

नमः वामोरु मूले। जं नमः वाम जानुनि । छं नमः दक्ष गुल्फे। चं नमः दक्ष पादांगुलिमूले। ङं नमः दक्ष पादांगुल्यग्रे। घं नमः वामोरु मूले । गं नमः वाम जानुनि। खं नमः वाम गुल्फे। कं नमः वाम पादांगुलिमूले । अः नमः वाम पादांगुल्यग्रे । अं नमः दक्ष पार्श्वे। औं नमः वाम पार्श्वे। ओं नमः पृष्ठे । ऐं नमः नाभौ । एं नमः जठरे। ॡं नमः हृदये । ऌं नमः दक्षांशे। ॠं नमः ककुदि । ॠं नमः वामांशे । ऊ नमः हृदयादि दक्ष करान्तम् । उं नमः हृदयादि वाम करान्तम्। ईं नमः हृदयादि दक्ष पादान्तम्। इं नमः नाभ्यादि वाम पादान्तम्। आं नमः हृदयादि कुक्षौ। अं नमः हृदयादि मुखें।

करशुद्धि न्यास

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं नमः दक्ष करतले। ४ आं नमः दक्ष करपृष्ठे। ४ सौः नमः दक्ष-कर-पार्श्वयोः। ४ अं नमः वाम-करतले। ४ आं नमः वाम कर-पृष्ठे। ४ सौः नमः वाम कर-पार्श्वयोः। ४ अं नमः मध्यमयोः। ४ आं नमः अनामिकयोः। ४ सौः नमः कनिष्ठिकयोः। ४ अं नमः अंगुष्ठयोः। ४ आं नमः तर्जन्योः। ४ सौः नमः करतल-करपृष्ठयोः।

आत्मरक्षा न्यास

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः श्री त्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष यह पढ़कर हृदय पर पुष्पाञ्जलि दे।

बाला षडङ्गन्यास

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः। ४ क्लीं शिरसे स्वाहा। ४ सौः शिखायै वषट्। ४ ऐं कवचाय हुँ। ४ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ४ सौः अस्त्राय फट्।

चतुरासन न्यास

४ ह्रीं क्लीं सौः देव्यात्मासनाय नमः पादयोः। ४ ह्रैं ह्क्लीं ह्सौः श्रीचक्रासनाय नमः जान्वोः। ४ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वमन्त्रासनाय नमः ऊरुमूले। ४ ह्रीं क्लीं ब्लें साध्यसिद्धासनाय नमः मूलाधारे।

वाग्देवतान्यास

४ अं आं इं ईं……अं अः र्व्लूं वशिनी वाग्देवतायै नमः शिरसि। ४ कं खं गं घं ङं क्ल्ह्रीं कामेश्वरी वाग्देवतायै नमः ललाटे। ४ चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनी वाग्देवतायै नमः भ्रूमध्ये। ४ टं ठं डं ढं णं प्लूं विमला वाग्देवतायै नमः कण्ठे। ४ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणा वाग्देवतायै नमः हृदये। ४ पं फं बं भं मं हस्ल्व्यूं जयिनी वाग्देवतायै नमः नाभौ। ४ यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरी वाग्देवतायै नमः गुह्ये। ४ शं षं सं हं लं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनी वाग्देवतायै नमः मूलाधारे।

बहिश्चक्रन्यास

४ अं आं सौः चतुरस्रयात्मक त्रैलोक्यमोहन चक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशति शक्तिसहित प्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः पादयोः। ४ ऐं क्लीं सौः षोडश दल पद्मात्मक सर्वाशापरिपूरक चक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादि षोडशशक्तिसहित गुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नमः जान्वोः। ४ ह्रीं क्लीं सौः अष्टदल पद्मात्मक सर्वसंक्षोभण चक्राधिष्ठात्र्यै अनङ्गकुसुमाद्यष्ट शक्ति सहित गुप्ततर योगिनी रूपायै त्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः ऊरुमूलयोः। ४ ह्रैं ह्क्लीं ह्स्सौः चतुर्दशारात्मक सर्वसौभाग्यदायक चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादि चतुर्दश शक्ति-

फा० ४

सहितसम्प्रदाय योगिनीरूपायै त्रिपुरवासिनीदेव्यै नमः नाभौ। ४ ह्सौं ह्सक्लीं ह्स्सौः बहिर्दशारात्मक सर्वार्थसाधक चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धि-प्रदादि दश शक्तिसहित कुलोत्तीर्ण योगिनीरूपायै त्रिपुरा श्रीदेव्यै नमः हृदये। ४ ह्रीं क्लीं ब्लें अन्तर्दशारात्मक सर्वरक्षाकर चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादि दशशक्ति निगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरमालिनीदेव्यै नमः कण्ठे। ४ ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मक सर्वरोगहर चक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्ट शक्तिसहित रहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरा सिद्धा देव्यै नमः मुखे। ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः त्रिकोणात्मक सर्वसिद्धिप्रद चक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादि त्रिशक्ति-सहितातिरहस्ययोगिनी रूपायै त्रिपुराम्बादेव्यै नमः नेत्रयोः। ४ क-१५ विन्द्वात्मक सर्वानन्दमय चक्राधिष्ठात्र्यै षडङ्गायुध दशशक्ति-सहित परापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै महात्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः मूर्ध्नि।*

---

* श्री यन्त्र नवचक्रों का है। इनकी अधिष्ठात्री नव चक्रेश्वरी देवियाँ हैं। श्री यन्त्र १ चतुरस्र, २ षोडशदल , ३ अष्टदल, ४ चतुर्दशार, ५ बहिर्दशार, ६ अन्तर्दशार, ७ अष्टार, ८ त्रिकोण और ९ विन्दुचक्र का बना है। इनके नाम क्रमशः १ त्रैलोक्यमोहन, २ सर्वाशा-परिपूरक, ३ सर्वसंक्षोभण, ४ सर्वसौभाग्यदायक, ५ सर्वसाधक, ६ सर्वरक्षाकर, ७ सर्वरोगहर, ८ सर्वसिद्धिप्रद और ९ सर्वानन्दमय हैं। उपासक उपर्युक्त नौ चक्रों का न्यास अपने १ पैर, २ जानु, ३ ऊरु-मूल, ४ नाभि, ५ हृदय, ६ कण्ठ, ७ मुख, ८ नेत्र और ९ शिर इन नौ अङ्गों पर करता है। अर्थात् अपने शरीर को वह नवचक्रात्मक श्रीयन्त्र बनाता है।

अन्तश्चक्रन्यास*

४ चतुरस्रत्रयात्मक त्रैलोक्यमोहन चक्राधिष्ठात्र्यै अणिमा-द्यष्टविंशति शक्तिसहित प्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः अधः सहस्रारे। ४ ऐं क्लीं सौः षोडशदल पद्मात्मक सर्वाशा-परिपूरक चक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादि षोडशशक्तिसहित गुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नमः अधः सहस्रारस्योपरि विषुसंज्ञे षड्दले। ४ ह्रीं क्लीं सौः अष्टदलपद्मात्मक सर्वसंक्षोभण चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादि चतुर्दश शक्तिसहित सम्प्रदाय योगिनीरूपायै त्रिपुरवासिनीदेव्यै नमः स्वाधिष्ठाने। ४ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः बहिर्दशारात्मक सर्वार्थसाधक चक्राधिष्ठित सर्वसिद्धिप्रदादि दशशक्ति-सहित कुलोत्तीर्णयोगिनीरूपायै त्रिपुरा श्रीदेव्यै नमः मणिपूरे। ४ ह्रीं क्लीं ब्लें अन्तर्दशारात्मक सर्वरक्षाकर चक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादि दशशक्तिसहित निगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरामालिनी देव्यै नमः अनाहते ४ ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मक सर्वरोगहर चक्रा-धिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्तिसहित रहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरा सिद्धादेव्यै नमः विशुद्धौ। ४ ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्स्रौः त्रिकोणात्मक सर्वसिद्धिप्रद चक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादि त्रिशक्तिसहितातिरह-स्ययोगिनीरूपायै त्रिपुराम्बा देव्यै नमः लम्बिकाग्रे। ४ क-१५ विन्द्वात्मक सर्वानन्दमय चक्राधिष्ठात्र्यै षडङ्गायुध दशशक्ति-सहित परापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै महात्रिपुरसुन्दरी देव्यै नमः आज्ञायां। आज्ञाचक्र से एक एक अंगुल ऊपर स्थान में—अं आं सौः नमः विन्दौ—आज्ञा चक्र के ऊपर एक अंगुल

---

* बहिश्चक्र यास में श्रीयन्त्र के नवचक्रों का न्यास शरीर के बाहर के अंगों में किया जाता है किन्तु इस न्यास में नवचक्रों का न्यास शरीर के भीतर के चक्रों में किया जाता है

के अन्तर पर विन्दु में। ऐं क्लीं सौः नमः अर्धचन्द्रे। ह्रीं क्लीं सौः नमः रोधिन्यां। ह्रैं ह्क्लीं ह्सौ नमः नादे। ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः नमः नादान्ते। ह्रीं क्लीं ब्लें नमः शक्तौ। ह्रीं श्रीं सौ नमः व्यापिकायां। ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्रौ नमः समनायां। क-१५ उन्मनायां। षोडशी नमः ब्रह्मरन्ध्रे महाविन्दौ।

कामेश्वर्यादि न्यास

४ क-५ अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथ नवयोनिचक्रात्मक आत्मतत्व-सृष्टिकृत्य-जाग्रद्दशाधिष्ठायकेच्छाशक्ति-वाग्भवात्मक वागीश्वरीस्वरूप महाकामेश्वरी ब्रह्मात्मरुद्रात्म शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः मूलाधारे। ४ क्लीं ह-६ सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथ दशारद्वय चतुर्दशारचक्रात्मक-विद्यातत्व-स्थितिकृत्य-स्वप्नदशाधिष्ठायक-ज्ञानशक्ति-कामराजात्मक-कामकलास्वरूप-महावज्रेश्वरी विष्णवात्मशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः अनाहते। ४ सौः स-४ सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथ अष्टदल षोडशदल चतुरस्रात्मक-शिवतत्व-संहारकृत्य-सुषुप्ति-दशाधिष्ठायक-क्रियाशक्ति-शक्तिबीजात्मक-परापरशक्ति-स्वरूप-महाभगमालिनी रुद्रात्म (ब्रह्मात्म) शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः आज्ञायाम्। ४ ऐं क-५ क्लीं ह-६ सौ स-४ परब्रह्मचक्रे महोडयानपीठे चर्यानन्दनाथ-समस्तचक्रात्मक-सपरिवार परमतत्व सृष्टि-संहार-कृत्य-तुरीय-दशाधिष्ठायकेच्छा-ज्ञान-क्रिया-शान्ता-शक्ति-वाग्भव कामराजशक्तिबीजात्मक परमशक्ति-स्वरूप श्री-महात्रिपुरसुन्दरी परब्रह्मात्मशक्ति श्रीपादु० ब्रह्म-रन्ध्रे।

पीठन्यास

आत्मरक्षा के लिये हृदय पर हाथ रखकर यह मंत्र पढ़े—
ऐं क्लीं सौः श्री महात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष।

न्यास

मं मण्डूकाधाराय नमः मूलाधारे। कां कालाग्निरुद्राय नमः उपरि स्वाधिष्ठान-पर्यन्तं। मूं मूलप्रकृत्यै नमः उपरि नाभिपर्यन्त। आं आधारशक्त्यै नमः स्वाधिष्ठानात् हृदय-पर्यन्तम्। हृदये—कूं कूर्माय नमः, अं अनन्ताय नमः, वं वराहाय नमः, पृं पृथिव्यै नमः, अं अमृतार्णवाय नमः, अं.... क्षं नवरत्नमयमणिद्वीपाय नमः, नं नन्दनोद्यानाय नमः, स्वं स्वर्णप्राकाराय नमः, चिं चिन्तामणिमण्डपाय नमः, रं रत्न-वेदिकायै नमः, रं रत्नसिंहासनाय नमः।

इसके बाद अपनी देह को देवता के रत्नसिंहासन के रूप में समझ कर निम्न प्रकार से पीठन्यास करे—पहले रत्नसिंहासन के पावों में न्यास करे। यथा—

धं धर्माय नमः दक्षांशे। ज्ञां ज्ञानाय नमः वामांशे। वैं वैराग्याय नमः दक्षजानौ। ऐं ऐश्वर्याय नमः वामजानौ।

इसके बाद सिंहासन के अंगों में न्यास करे। यथा—

अं अधर्माय नमः मुखे। अं अज्ञानाय नमः वाम पार्श्वे। अं अवैराग्याय नमः नाभौ। अ अनैश्वर्याय नमः दक्ष पार्श्वे।

इसके बाद हृदय में न्यास करे। यथा—

ह्रीं आदिमायायै नमः। विं विद्यायै नमः। आं आनन्द-कन्दपद्माय नमः। स संविन्नालाय नमः। प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः।

विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः। पं पंचाशद्वीजाढ्य-सर्व-तत्त्वरूपायै कर्णिकायै नमः।

तब कर्णिका में न्यास करे। यथा—अं अर्कमण्डलाय नमः। उं सोममण्डलाय नमः। रं वह्निमण्डलाय नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः।

तदनन्तर बीच में न्यास करे। यथा—आं आत्मने नमः। अं अन्तरात्मने नमः। पं परमात्मने नमः। ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।

इसके बाद केशरों में पूर्व से लेकर आठों दिशाओं में न्यास करे। यथा—

इं इच्छायै नमः। ज्ञां ज्ञानायै नमः। क्रिं क्रियायै नमः। कां कामिन्यै नमः। कां कामदायै नमः। रं रत्यै नमः। रं रतिप्रियायै नमः। नं नन्दायै नमः।

फिर बीच में—मं मनोन्मन्यै नमः—से न्यास कर पीठ-मन्त्र का न्यास करे। यथा—ऐं परायै अपरायै ह्सौः सदाशिव-महाप्रेत-पद्मासनाय नमः।

इस प्रकार अपनी देह की देवता के पीठ-रूप में भावना करे।

श्री ललिता मूलमन्त्र न्यास

अस्य श्री ललिता त्रिपुरसुन्दरी महामन्त्रस्य श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी देवता, ऐं क-५ बीजं, सौः स-४ शक्तिः, क्लीं ह-६ कीलकं ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे चतुर्वर्गाप्तये च जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—श्रीदक्षिणामूर्तये नमो मूर्ध्नि, पंक्त्यै नमो मुखे, श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमो हृदि, ऐं क-५ बीजाय नमो गुह्ये, सौः स-४ शक्तये नमः पादयोः, क्लीं ह-६ कीलकाय नमो नाभौ।

कराङ्गन्यास—ऐं क-५ अंगुष्ठाभ्यां नमः। क्लीं ह-६ तर्जनीभ्यां नमः। सौः स-४ मध्यमाभ्यां नमः। ऐं क-५

अनामिकाभ्यां नमः। क्लीं ह-६ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सौः स-४ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास—ऐं क-५ हृदयाय नमः। क्लीं ह-६ शिरसे स्वाहा। सौः स-४ शिखायै वषट्। ऐं क-५ कवचाय हुं। क्लीं ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट्। सौः स-४ अस्त्राय फट्।

अन्तर्याग

मानसिक पूजन

इस प्रकार पीठन्यास कर चुकने पर हृदय-कमल के पूर्वोक्त रत्नसिंहासन पर देवता का ध्यान करे। यथा—

[१]

सिन्दूरारुण-विग्रहां त्रिनयनां माणिक्य-मौलि-स्फुरत्-
तारानायक-शेखरां स्मित-मुखीमापीन - वक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यामलि-पूर्णरत्न-चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं
सौम्यां रत्न-घटस्थ-रक्त-चरणां ध्याये परामम्बिकाम्॥

[२]

चतुर्भुजे चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुंकुम-राग-शोणे।
पुण्ड्रेक्षु-पाशांकुश-पुष्पबाण-हस्ते नमस्ते जगदेक-मातः।

[३]

कुंकुम-पङ्क-समाभामंकुश-पाशेक्षु-कुसुम-शराम् ।
पङ्कज-मध्य-निषण्णां पंकेरुह-लोचनां परां वन्दे ॥

❀ अनेक साधक समयाभाव के कारण संक्षिप्त पञ्चोपचार की ही मानसिक पूजा करते हैं, जो इस प्रकार है—

हृत्कमल में इष्टदेवता के पूजायन्त्र का ध्यान करे। यन्त्र के विन्दु में इष्टदेवता का ध्यान कर मानस पूजा करे। यथा—

'लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीत्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि' यह पढ़कर अधोमुखकनिष्ठांगुष्ठयोग से गंधमुद्रा दिखाए।

'हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीत्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि' यह पढ़कर अधोमुखतर्जनीअंगुष्ठयोग से पुष्प-मुद्रा दिखाए।

'यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि' यह पढ़कर ऊर्ध्वमुखतर्जन्यंगुष्ठयोग से धूपमुद्रा दिखाये।

'रं वन्ह्यात्मकं दीपं श्रीत्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि' यह पढ़कर ऊर्ध्वमुखमध्यमांगुष्ठयोग से दीपमुद्रा दिखाए।

'वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीत्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि' यह पढ़कर अनामांगुष्ठयोग से नैवेद्यमुद्रा दिखाए।

'शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-पादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि'—यह पढ़कर सर्वाङ्गुलियों से ताम्बूलमुद्रा दिखाए।

मूलं❀ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि देवि इदं हृदयपद्ममासनमास्यताम्—यह मन्त्र पढ़कर पद्ममुद्रा से हृदय रूपी आसन पर देवता को बैठावे। तदनन्तर पाद्यादि उपचारों से उसका निम्न प्रकार से मानसिक पूजन करे—

मूलं कामेश्वर शिवसहितायै श्री महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्रारच्युतामृतं पाद्यं नमः—यह पढ़ कर चरणों पर सहस्रदल कमल से झरने-वाले अमृत रूपी जल का पाद्य समर्पित करे।

मूलं कामेश्वर-शिवसहितायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः मनरूपमर्घ्यं स्वाहा—यह पढ़ कर मस्तक पर मनरूपी अर्घ्य प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-शिवसहितायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः सहस्रारच्युतामृतरूपमाचमनं स्वधा—यह पढ़ कर सहस्रदलकमल से झरनेवाले अमृत से मुख में आचमन प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-शिवसहितायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः सहस्रारच्युतामृतैः सर्वाङ्गे स्नानं समर्पयामि—यह पढ़ कर सहस्रदल से झरनेवाले अमृत रूपी जल से स्नान करावे।

मूलं कामेश्वर-शिवसहितायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै आकाशतत्वरूप वसनं समर्पयामि नमः—यह पढ़कर आकाश रूपी वसन और आभूषण प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-शिवसहितायै श्री महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः तत्वरूपं गन्धं समर्पयामि—यह पढ़कर तत्वरूपी गन्ध प्रदान करे।

इस प्रकार मानसिक पूजन कर यथाशक्ति मानसिक जप करे। तब ईकारात्मक कामकला का चिन्तन कर उस पर श्री महात्रिपुरसुन्दरी का पूर्ववत् ध्यान करे।

❀ साधक जहाँ 'मूलं' शब्द आया है, वहाँ अपने मूलमन्त्र का उपयोग करे।

मूलं कामेश्वर-शिवसहितायै श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः चित्तरूपं पुष्पं समर्पयामि वौषट्—यह पढ़ कर चित्त-रूपी पुष्प प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-शिवसहितायै श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः प्राणरूपं धूपं समर्पयामि—यह पढ़कर प्राण रूपी धूप प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-शिवसहितायै श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः तेजस्तत्व-रूपं दीपं समर्पयामि—यह पढ़ कर तेजरूपी दीपक प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-शिव सहितायै श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः सुधाम्बुधिरूपं नैवेद्यं समर्पयामि—यह पढ़कर नैवेद्य प्रदान करे।

मूल कामेश्वर-शिवसहितायै श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः अनाहत-शब्दरूपघण्टावादनं समर्पयामि—यह पढ़ कर अनाहत शब्द-रूपी घण्टावादन कर देवता को प्रसन्न करे।

मूलं कामेश्वर-शिवसहितायै श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः वायुतत्वरूपं चामरं समर्पयामि—यह पढ़कर वायुतत्त्व रूपी चामर से देवता को प्रसन्न करे।

मूलं कामेश्वर-शिवसहितायै श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः इन्द्रिय-कर्माणि मनश्चाञ्चल्यरूपं नृत्यं समर्पयामि—यह पढ़कर इन्द्रियों की गतिविधि और मन की चञ्चलता रूपी नृत्य देवता को प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-शिवसहितायै श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः अमाय अनहङ्कार - अराग-अमद-अमोह - अदम्भ-अद्वेष-अक्षोभ-अमात्सर्य - अलोभ-अहिंसा-इन्द्रियनिग्रह-दया-क्षमा-ज्ञान-रूपाणि पञ्चदश-पुष्पाणि समर्पयामि वौषट्—यह पढ़कर पन्द्रह पुष्पों की पुष्पाञ्जलि प्रदान करे।

मूलं कामेश्वर-शिवसहितायै श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै काम-क्रोधरूपं बलिं समर्पयामि नमः—यह पढ़कर काम-क्रोध रूपी पशु की बलि देवता को प्रदान करे।

इस प्रकार पूजन कर साधक अपने इष्टमन्त्र का जप करे। वह कुण्डलिनी को सूत्र मानकर सविन्दु पञ्चाशत् मातृका वर्णों की माला ग्रथित करे, जिसमें लोम-विलोम क्रम से अपने मूल-मन्त्र का जप करे। इस वर्णमाला में 'क्ष' वर्ण को सुमेरु माने। इसके बाद देवता को निम्न मन्त्र से जप का समर्पण करे—

सर्वान्तरात्मनिलये स्वान्तर्ज्योतिःस्वरूपिणि।
गृहाणान्तर्जपं मातः श्रीललिते नमोऽस्तु ते॥

इसके बाद मानसिक हवन करे।

२—मानसिक हवन

यह हवन मूलाधार चक्र के कमल में करे। यहाँ चित् रूपी अग्नि में हवन करे। आधार-चक्र के कमल को अन्तरात्मा, परमात्मा और ज्ञानात्मा इन तीनों से व्याप्त समझना चाहिये। फिर कुण्ड की आनन्दरूप मेखला का और त्रिवलययुक्त नाद-विन्दुरूप योनियुक्त चित्-कुण्ड का ध्यान करे। इस कुण्ड में दाहिनी ओर पिङ्गला, बाईं ओर इडा और मध्य में सुषुम्णा का ध्यान करके धर्म-अधर्म रूपी हवि से निम्न मन्त्रों से हवन करे—

मूलं नाभौ चैतन्यरूपेऽग्नौ हविषा मनसा स्रुचा।
ज्ञानप्रदीपिते नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम्॥

श्री मत्त्रिपुरसुन्दरी देव्यै स्वाहा—यह मन्त्र पढ़कर धर्म-अधर्म रूपी हवि से प्रथम आहुति प्रदान करें।

मूलं धर्माधर्महविर्दीप्ते आत्माग्नौ मनसा स्रुचा।
सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम्॥

श्री मत्त्रिपुरसुन्दरी देव्यै स्वाहा—यह मन्त्र पढ़कर द्वितीय आहुति प्रदान करे।

मूलं प्रकाशाकाशहस्ताभ्यां अवलम्ब्यात्मना स्रुचा।
ज्ञानप्रदीपिते नित्यं ब्रह्मवृत्तीर्जुहोम्यहम् ॥

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देव्यै स्वाहा—यह मन्त्र पढ़कर तृतीय आहुति प्रदान करे।

मूलं अन्तर्निरन्तरनिरिन्धनमेधमाने ।
मोहान्धकारपरिपन्थिनि सम्विदग्नौ ॥
कस्मिंश्चिदद्भुत-मरीचि-विकास-भूमौ ।
विश्व जुहोमि वसुधादिशि-वावसानम् ॥

श्री महात्रिपुरसुन्दरी देव्यै स्वाहा—यह मन्त्र पढ़कर चौथी आहुति प्रदान करे। फिर—

इदन्तु पात्रभरितमहन्तापरमामृतम् ॥
पूर्णाहुतिमये वह्नौ पूर्णहोमं जुहोम्यहम् ॥

श्री महात्रिपुरसुन्दरी देव्यै स्वाहा—यह मन्त्र पढ़कर पूर्णाहुति प्रदान करे।

बाह्य पूजा

अन्तर्याग कर चुकने पर बाह्यपूजा का प्रारम्भ करे। यदि सामान्यार्घ्य पहले न स्थापित किया गया हो, तो उस पूजा के लिये यहाँ पहले सामान्यार्घ्यपात्र की स्थापना करे। यथा—

सामान्यार्घ्यपात्र का स्थापन*

अपने दक्ष भाग में त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल बनावे, ॐ श्री महात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्य-पात्राधार-मण्डलाय नमः—

* श्रीकुल-क्रम में सामान्यार्घ्यपात्र-स्थापन का मण्डल बनाने से पहले कलश के स्थापन का मण्डल बना लिया जाता है। अतएव अपनी बाईं ओर कलश के स्थापन का मण्डल पहले बना लें, तब सामान्यार्घ्यपात्र का स्थापन आरम्भ करें।

इस मन्त्र से मण्डल का पूजन करे। फिर उस पर आधार रखकर—ॐ मं वह्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने नमः—इस मन्त्र से उस आधार का पूजन करे।

फट्—इस मन्त्र से शङ्खादि पात्र को धोकर उस आधार पर स्थापित करे। फिर—ॐ अं अर्कमण्डलाय अर्थप्रदद्वादश-कलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यपात्राय नमः—इस मन्त्र से उस अर्घ्यपात्र का पूजन करे और 'ॐ' या 'नमः' मन्त्र से उस पात्र को शुद्ध जल से पूर्ण करे। फिर—ॐ उं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्री महात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्य-पात्रद्रव्याय नमः—इस मन्त्र से उस पात्र के जल का पूजन करे। इसके बाद—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

इस मन्त्र से अंकुश मुद्रा द्वारा सूर्यमण्डल से तीर्थों का उस पात्र के जल में आवाहन करे।

फिर मूलमन्त्र से गन्धादि उस जल में छोड़े और वरुण बीज 'वं' का आठ बार जप कर उस पात्र को अभिमन्त्रित कर धेनुमुद्रा दिखाकर उसे अमृतमय करे। फिर उसे मत्स्य-मुद्रा से आच्छादित करे, तब योनिमुद्रा से उसका नमस्कार करे।

कलश का स्थापन

सामान्यार्घ्यपात्र के स्थापन के बाद पूजा-द्रव्यों का शोधन करे। प्रथम तत्त्व के शोधन के लिए कलश का स्थापन करे। यथा—अपने वाम भाग में विन्दु-सहित त्रिकोण, उसके बाद षट्कोण, वृत्त और चतुरस्र ऐसा एक मण्डल बनावे।

फिर सामान्यार्घ्य के जल से उसका प्रोक्षण कर उसमें—ॐ आधारशक्तिभ्यो नमः—इस मन्त्र से आधारशक्तियों का पूजन करे। इसके बाद 'फट्' मन्त्र से आधार को धोकर 'नमः' मन्त्र पढ़कर आधार को उस मण्डल पर रक्खे। फिर—रं वह्नि-मण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने नमः—इस मन्त्र से आधार पर अग्निमण्डल का पूजन करे।

तदनन्तर कलश को 'फट्' मन्त्र से धोकर 'नमः' मन्त्र पढ़कर उसे आधार पर स्थापित करे। फिर—अं अर्कमण्डलाय अर्थप्रदद्वादशकलाय नमः—इस मन्त्र से कलश पर सूर्यमण्डल का पूजन करे। तब उसे कारण से पूर्ण करे। पहले कारण का नीचे लिखी प्रक्रिया से शोधन कर ले। यथा—

अपने सामने एक पात्र रखकर उसे कारण से पूर्ण कर उसका संस्कार करे। यथा—

(१) वौषट्—यह मन्त्र पढ़कर उसे देखे।

(२) फट्—यह मन्त्र पढ़कर फट्कार से उसकी रक्षा करे।

(३) हुं—यह पढ़ उसका अवगुण्ठन मुद्रा से अवगुण्ठन करे।

(४) वषट्—यह मन्त्र पढ़कर उसे शुद्ध करे।

(५) स्वाहा—यह मन्त्र पढ़कर उसका पूजन करे।

अब उसके दश दोषों का निवारण करे। 'नमः' मन्त्र पढ़कर उस पर हाथ रखकर नीचे के मन्त्र पढ़े—

(१) ॐ ह्रीं ऐं श्रीं गीं हसखफ्रें पथिकदेवताभ्यो हुं फट् स्वाहा।

(२) ॐ ह्रीं हसखफ्रें अस्फालि ग्रामचाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा।

(३) ॐ ह्रीं हसखफ्रें स्पर्शचाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा।

(४) ॐ ह्रीं श्रीं हसखफ्रें दृष्टिचाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा।

(५) ॐ ह्रीं श्रीं हसखफ्रें क्रोधचाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा।

(६) ॐ ह्रीं श्रीं हसखफ्रें सृष्टिचाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा।

(७) ॐ ह्रीं श्रीं ओं क्रों क्लीं हसखफ्रें घटचाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा।

(८) ॐ ह्रीं श्रीं हसखफ्रें तपनवेध-चाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा।

(९) ॐ ह्रीं हसखफ्रें निर्दोष चाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा।

(१०) ॐ ह्रीं श्रीं हसखफ्रें पशुपाश-चाण्डालिनि हुं फट् स्वाहा।

इस प्रकार दश दोषों को दूर कर निम्न मन्त्र तीन बार जपे—

ॐ छ्रां छ्रीं छ्रूं छ्रैं छ्रौं छ्रः छुरिके अलिशोभने विकारान् अस्य द्रव्यस्य हर हर स्वाहा।

इसके बाद निम्न मन्त्रों से उसके शापों का मोचन करे—

ॐ एकमेव परंब्रह्म स्थूलसूक्ष्ममयं ध्रुवम्।
कचोद्भवां ब्रह्महत्यां तेन ते नाशयाम्यहम्॥
ॐ वेदानां प्रणवो वीजं ब्रह्मानन्दमयं यदि।
तेन सत्येन हे देवि ब्रह्मशापं व्यपोहतु॥

ॐ वां वीं वूं वैं वौं वः ब्रह्मशापविमोचितायै सुधादेव्यै नमः—इस मन्त्र का १० बार जप करे।

ॐ सूर्यमण्डलसम्भूते वरुणालयसम्भवे।
अमावीजमये देवि शुक्रशापाद् विमुच्यताम्॥

ॐ शां शीं शूं शैं शौं शः शुक्रशापविमोचितायै सुधादेव्यै नमः—इस मन्त्र का दश बार जप करे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः सुरे कृष्णशापं विमोचय विमोचय अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा—इस मन्त्र का १२ बार जप करे।

—इस मन्त्र का तीन बार जप करे। इसके बाद तिरस्करिणी का ध्यान करे। यथा—

नीलं हयं समधिरुह्य पुरः प्रयान्ती,
नीलांशुकाभरणमाल्यविलेपनाढ्या ।
निद्रापटेन भुवनानि तिरोदधाना ॥
खड्गायुधा भगवती परिपातु भक्तान् ॥

इस प्रकार ध्यान कर नीचे के मन्त्र तीन बार जपे—

ॐ ह्रीं श्रीं नमो भगवति माहेश्वरि सर्वपशुजनमनश्चक्षुस्तिरस्कारणं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं परमप्रकाशिनि परमाकाशशून्यनिवासिनि सूर्यचन्द्राग्निभक्षिणि पात्रं विश विश स्वाहा।

इस प्रकार कारण का संस्कार कर विलोम मातृका ('क्षं लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं) और उसके अन्त में मूलमन्त्र पढ़ता हुआ उस कारण से कलश को पूर्ण करे। फिर लाल वस्त्र और लाल फूलों की माला से कलश को विभूषित कर उस पर चन्दन का लेप कर उसे देवी-स्वरूप समझे।

इसके बाद कलश के द्रव्य में—उं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः—इस मन्त्र से चन्द्रमण्डल का पूजन करे।

तदनन्तर कलश के द्रव्य के मध्य में अकथादि त्रिकोण यन्त्र की कल्पना-द्वारा रचना करे। फिर—ह्सौः मण्डलाय नमः—इस मन्त्र से उस त्रिकोण का पूजन करे।

इसके बाद उस यन्त्र में आनन्दभैरव और आनन्दभैरवी का ध्यान करे। पहले आनन्दभैरव का ध्यान करे। यथा—

ॐ सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्।
अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम् ॥
अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपरिस्थितम्।
वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाभरणभूषितम् ॥
कपालखट्वाङ्गधरं घण्टाडमरुवादिनम्।
पाशांकुशधरं देवं गदामुशलधारिणम् ॥
खड्गखेटकपट्टीशं मुद्गरं शूलदण्डधृक्।
विचित्रखेटकं मुण्डं वरदाभयधारिणम् ॥
लोहितं देवदेवेशं भावयेत्साधकोत्तमः।

इस प्रकार आनन्दभैरव का ध्यान कर—हसक्षमलवरयूं आनन्दभैरवाय वषट्—इस मन्त्र से आनन्दभैरव का पूजन करे।

तदनन्तर आनन्दभैरवी का ध्यान करे। यथा—

भावयेच्च सुधां देवीं चन्द्रकोटियुतप्रभाम्।
हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम् ॥
अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम्।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सम्मुखीम् ॥

इस प्रकार आनन्दभैरवी का ध्यान कर—सहक्षमलवरयीं आनन्दभैरव्यै वौषट्—से आनन्दभैरवी का पूजन करे।

भूल-सुधार—पृष्ठ ४० पर सबसे ऊपर '—इस मन्त्र का तीन बार जप करे' के पूर्व निम्न सात पंक्तियों को जोड़ लें—

ॐ रां रीं रूं रैं रौं रः रुद्रशापविमोचितायै सुधादेव्यै नमः—इस मन्त्र का १२ बार जप करे।

ॐ पवमानः परानन्दः पवमानः परोरसः।
पवमानं परं ज्ञानं तेन ते पावयाम्यहम् ॥

—इस मन्त्र का तीन बार जप करे।

ॐ कृष्णशापाद् विमुक्ता त्वं विमुक्ता ब्रह्मशापतः।
विमुक्ता रुद्रशापाच्च पवित्रा भव साम्प्रतम् ॥

इसके बाद उन दोनों का संयोगावस्था का ध्यान करे और यह समझे कि उनके दिव्य स्राव से वह द्रव्य अमृतमय हो गया है। और तब—

ऐं प्लूं स्रौं जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा—इस मन्त्र का आठ बार जप करे। इसके बाद निम्न वेदमन्त्र का तीन बार जप करे—

ॐ हंसः शुचिषत् वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदीषदतिथिर्दुरोण-सत्। नृषद्वर सद् ऋत सद्व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्।

ऐं ह्रीं श्रीं आनन्देश्वरि विद्महे सुधादेव्यै धीमहि तन्नोऽर्द्ध-नारीश्वरि प्रचोदयात्— यह आनन्दगायत्री दस बार जपे।

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीर्मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ॐ रजः। मधुद्यौरस्तु न पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः। मधु मधु मधु॥

उपर्युक्त मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर मूलमन्त्र से उसे आठ बार अभिमन्त्रित करे। इसके बाद—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि द्रव्येऽस्मिन्सन्निधिं कुरु॥

इस मन्त्र से अंकुशमुद्रा द्वारा सूर्यमण्डल से तीर्थों का कारण में आकर्षण करे। फिर 'व' बीज मन्त्र पढ़ धेनुमुद्रा दिखा कारण को अमृतमय करे। मत्स्यमुद्रा से उसे आच्छादित करे। तब 'हु' पढ़ अवगुण्ठन मुद्रा से अवगुण्ठित करे। मूलमन्त्र पढ़कर योनिमुद्रा से नमस्कार कर 'वं' वरुण बीज और मूलमन्त्र का आठ बार जप करे।

विशेषार्घ्यपात्र-स्थापन

इसके बाद विशेषार्घ्यपात्र का स्थापन करे। इसे अपने और यन्त्रराज के सिंहासन के बीच में स्थापित करे। पहले उस स्थान पर त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल बनावे।

ॐ श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्याः विशेषार्घ्यमण्डलाय नमः—इस मन्त्र से उस मण्डल का पूजन करे। मण्डल पर आधार स्थापित कर—ॐ रं वह्नि-मण्डलाय धर्मप्रदद्वादशकलात्मने श्रीत्रिपुरसुन्दर्याः विशेषार्घ्याधाराय नमः— इस मन्त्र से उस आधार का पूजन करे।

इसके बाद 'फट्'—इस मन्त्र से अर्घ्यपात्र को धोकर उस आधार पर स्थापित करे और—

ॐ अं अर्कमण्डलाय अर्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्याः विशेषार्घ्यपात्राय नमः—इस मन्त्र से उस अर्घ्य-पात्र का पूजन करे और मूलमन्त्र पढ़ कर कलश के अमृत से पूर्ण करे। फिर—

ॐ उं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दर्याः विशेषार्घ्यपात्राय नमः—इस मन्त्र से पात्र के द्रव्य का पूजन करे।

इसके बाद उस पात्र में पूर्वादि चारों दिशाओं और मध्य में पञ्चरत्नों का नीचे के मन्त्रों से पूजन करे—

ॐ ग्लूँ गोमेदरत्नाय नमः पूर्वे। ॐ स्लूं सुवर्णरत्नाय नमः दक्षिणे। ॐ प्लूं पद्मरागरत्नाय नमः पश्चिमे। ॐ न्लूं नीलरत्नाय नमः उत्तरे। ॐ म्लूं माणिक्यरत्नाय नमः मध्ये।

इसके बाद पात्र के द्रव्य के मध्य में अकथादि त्रिकोण का और उसके ऊपर षट्कोण का चिन्तन करे। तदुपरान्त त्रिकोण के तीनों कोनों में—क-५ नमः, ह- नमः, स-४ नमः—इन मन्त्रों से पूजन करे।

इसके बाद षट्कोणों में षडङ्गों का पूजन करे। यथा—

क-५ हृदयशक्त्यै नमः। ह-६ शिरशक्त्यै नमः। स-४ शिखा-शक्त्यै नमः। क-५ कवचशक्त्यै नमः। ह-६ नेत्र-शक्त्यै नमः। स-४ अस्त्रशक्त्यै नमः।

इसके बाद—

ॐ स्लूं ग्लूं प्लूं न्लूं म्लूं अमृते ऽमृतोद्भवे ऽमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा—यह मन्त्र पढ़कर ब्रह्मरन्ध्र के सहस्रदलकमल के चन्द्रमण्डल से बहती हुई अमृतधारा को नासा के मार्ग से पात्र के द्रव्य में गिरावे।

फिर मूलमन्त्र और 'वं' बीज का आठ बार जप कर पात्र के द्रव्य को अभिमन्त्रित करे और धेनुमुद्रा दिखाकर उसे अमृत-मय करे।

मांसादि द्रव्य-शोधन

विशेषार्घ्य की स्थापना के बाद द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और पञ्चम आदि तत्त्वों का शोधन करे।

द्वितीय तत्त्व अर्थात् मांस का शोधन—अपने आगे त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल बनावे। उस पर मांस-पात्र रखकर उसका संस्कार करे।

दाहने हाथ पर बायां हाथ रख 'यं' वायुबीज पढ़कर उसके दोषों का शोषण करे। फिर बायें हाथ पर दाहना हाथ रखकर 'रं' अग्निबीज पढ़कर उसके दोषों का दहन करे। फिर धेनुमुद्रा दिखाकर 'वं' वरुण बीज पढ़कर उसे अमृतमय करे। फिर मूल-मन्त्र पढ़कर सामान्यार्घ्य का जल उस पर छिड़के।

फिर मांस के ऊपर हाथ रखकर यह पढ़े—

छागलाद्येण मत्यन्त्रिकृतरूपाय विष्णवे।
बल्यथ देवदेव्योश्च पवित्री भव साम्प्रतम्॥

ॐ प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥

तृतीय तत्त्व अर्थात् मत्स्य का शोधन—पूर्वोक्त प्रकार से मत्स्य का पात्र मण्डल पर रखकर शोषणादि संस्कार प्रोक्षण तक कर उस पर हाथ रखकर यह मन्त्र पढ़े—

कृतावतारो हरिणा बलिना पीडितं जगत्।
बलिना निगृहीतं तु कौलिकानां हिताय च॥
भैरवीपरितोषार्थं स्वयं मीनोऽभवद् हरिः।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्॥
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

चतुर्थ तत्त्व अर्थात् मुद्रा का शोधन—पूर्ववत् मुद्रापात्र को स्थापित कर शोषणादि संस्कार कर उस पर हाथ रखकर यह पढ़े—

श्रीदेव्यर्चनकाले तु यानि यानीह साम्प्रतम्।
वस्तूनि सौरभेयानि पवित्राणीह सिद्धये॥
ॐ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुराततम्॥

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते।
विष्णोर्यत् परमं पदम्॥

पञ्चम तत्त्व का शोधन—पञ्चम तत्त्व का पूर्ववत् शोषणादि संस्कार करके उस पर हाथ रख यह मन्त्र पढ़े—

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते॥
गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति।
गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ॥

श्रीपात्रस्थापन

अब श्री पात्र की स्थापना करे। विशेषार्घ्यं के पास और अपने आसन तथा यन्त्रराज के बीच में श्रीपात्र की स्थापना करे। पहले उस स्थान पर ह्रीं-युक्त त्रिकोण-वृत्त-षट्कोण-चतुरस्र का मण्डल बनावे। सामान्यार्घ्य के जल से उसका प्रोक्षण करे। फिर चतुरस्र के चारों कोनों में आग्नेयादि-क्रम से नीचे के मन्त्रों से पीठों का पूजन करे—

पूं पूर्णगिरिपीठाय नमः आग्नेये। उं उड्डीयानपीठाय नमः नैर्ऋत्ये। जां जालन्धरपीठाय नमः वायव्ये। कां कामरूपपीठाय नमः ईशाने।

पीठों का पूजन कर पूर्वादि-क्रम से षट्कोण के कोनों में नीचे के मन्त्रों से षडङ्गों का पूजन करे—

ॐ क-५ हृच्छक्त्यै नमः। ॐ ह-६ शिरशक्त्यै नमः। ॐ स-४ शिखाशक्त्यै नमः। ॐ क-५ कवचशक्त्यै नमः। ॐ ह-६ नेत्रशक्त्यै नमः। ॐ स-४ अस्त्रशक्त्यै नमः

फिर मूलमन्त्र के तीन खण्डों से त्रिकोण के अग्र, दक्षिण और उत्तर के कोनों का पूजन करे और उस त्रिकोण में आधार के लिए त्रिपद रक्खे।

इसके बाद 'नमः' मन्त्र से त्रिपद पर सामान्यार्घ्य का जल छिड़के और —यं धूम्रार्चिषे नमः, रं ऊष्मायै नमः, लं ज्वलिन्यै नमः, वं ज्वालिन्यै नमः, शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः, षं सुश्रियै नमः, सं रूपायै नमः, हं कपिलायै नमः, लं हव्यवाहायै नमः, क्षं कव्यवाहायै नमः—इन मन्त्रों से त्रिपद के चारों ओर पूर्वादि-क्रम से अग्नि की कलाओं का पूजन कर उसके मध्य में—रं वह्निमण्डलाय धर्म-प्रद दशकलात्मने नमः—इस मन्त्र से अग्निमण्डल की पूजा करे।

इसके बाद नारिकेल आदि के पात्र को 'फट्' मन्त्र से धोकर उस त्रिपद पर रक्खे और—कं भं तपिन्यै नमः, खं बं तापिन्यै नमः, गं फं धूम्रायै नमः, घं पं मरीच्यै नमः, ङं नं ज्वालिन्यै नमः, चं धं रुच्यै नमः, छं दं सुषुम्नायै नमः, जं थं भोगदायै नमः, झं तं विश्वायै नमः, ञं णं बोधिन्यै नमः, टं ढं धारिण्यै नमः, ठं डं क्षमायै नमः—इन मन्त्रों से पात्र के चारों ओर पूर्वादि-क्रम से सूर्य की कलाओं का पूजन कर उसके मध्य में—अं अर्कमण्डलाय अर्थ-प्रद-द्वादशकलात्मने नमः—इस मन्त्र से सूर्यमण्डल का पूजन करे।

इसके बाद पात्र में त्रिकोण-वृत्त-षट्कोण का एक मण्डल बनावे। त्रिकोण के तीनों कोनों में मूलमन्त्र के तीन भागों से प्रत्येक से एक-एक कोने में पूजन करे। फिर षडङ्ग के मन्त्रों से षट्कोण के प्रत्येक कोने में पूजन करे। फिर मूलमन्त्रयुक्त विलोम-मातृका का उच्चारण करता हुआ कलश के अमृत से त्रिकोण का भाग पूर्ण करे। फिर सामान्यार्घ्य के जल से उसका एक भाग पूर्ण करे। फिर पात्र में गन्धाक्षत छोड़कर—अं अमृतायै नमः, आं मानदायै नमः, इं पूषायै नमः, ईं तुष्ट्यै नमः, उं पुष्ट्यै नमः, ऊं रत्यै नमः, ऋं धृत्यै नमः, ॠं शशिन्यै नमः, ऌं चन्द्रिकायै नमः, ॡं ज्योत्स्नायै नमः, एं कान्त्यै नमः, ऐं श्रियै नमः, ओं प्रीत्यै नमः, औं अङ्गदायै नमः, अं पूर्णायै नमः, अः पूर्णामृतायै नमः—इन मन्त्रों से पात्र के चारों ओर चन्द्रमा की कलाओं का पूर्वादि क्रम से पूजन कर उसके बीच में—उं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने नमः—इस मन्त्र से सोममण्डल का पूजन करे।

इसके बाद श्रीपात्र के द्रव्य में अकथ त्रिकोण की कल्पना कर उसके तीनों कोनों में मूलमन्त्र के तीन खण्डों से पूजन करे और

'ॐ गङ्गे च यमुने०' इस मन्त्र को पढ़ अंकुश-मुद्रा से उस द्रव्य में तीर्थों का आवाहन करे। और उसमें शुद्धि आदि के तत्वों के खण्ड निक्षेप करे। इसके बाद—हसक्षमलवरयूं आनन्दभैरवाय वषट्—इस मन्त्र से उस त्रिकोण के मध्य में आनन्दभैरव का पूजन करे। फिर—सहक्षमलवरयीं आनन्दभैरव्यै वौषट्—इस मन्त्र से आनन्दभैरवी का वहीं पूजन करे। तदनन्तर—

ग्लूं गगनरत्नेभ्यो नमः पूर्वे। स्लूं स्वर्गरत्नेभ्यो नमः दक्षिणे। म्लूं मर्त्यरत्नेभ्यो नमः पश्चिमे। प्लूं पातालरत्नेभ्यो नमः उत्तरे।

इन मन्त्रों से द्रव्य के चारों ओर भिन्न-भिन्न दिशाओं में चार रत्नों का पूजन कर उसके मध्य में—न्लूं नागरत्नेभ्यो नमः—इस मन्त्र से पाँचवें रत्न का पूजन करे। इसके बाद—

ॐ ब्रह्माण्ड-खण्ड-सम्भूतमशेष-रस-सम्भृतम्।
आपूरित-महापात्रं पीयूष-रसमावह ॥
ॐ अखण्डैक-रसानन्दाकरे पर-सुधात्मनि।
स्वच्छन्द-स्फुरणामत्र निधेह्यकुल-रूपिणि ॥
ॐ अकुलस्थामृताकारे सिद्धि-ज्ञान-करे परे ॥
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्न-रूपिणि ॥
ॐ तद्रूपेणैकरस्यञ्च कृत्वार्घ्यं तत्स्वरूपिणि।
भूत्वा परामृताकारं मयि चित्स्फुरणं कुरु ॥

इन मन्त्रों से पात्र को अभिमन्त्रित करे। तदनन्तर—

(१) ऐं प्लूं झ्रौं सौं जूं सः अमृतेऽमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा।

(२) वद वद वाग्वादिनि ऐं।

(३) क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि महाक्षोभं कुरु।

(४) सौः मोक्षं कुरु।

'ॐ गङ्गे च यमुने०' इस मन्त्र को पढ़ अंकुश-मुद्रा से उस द्रव्य में तीर्थों का आवाहन करे। और उसमें शुद्धि आदि के तत्वों के खण्ड निक्षेप करे। इसके बाद—हसक्षमलवरयूं आनन्दभैरवाय वषट्—इस मन्त्र से उस त्रिकोण के मध्य में आनन्दभैरव का पूजन करे। फिर—सहक्षमलवरयीं आनन्दभैरव्यै वौषट्—इस मन्त्र से आनन्दभैरवी का वहीं पूजन करे। तदनन्तर—

ग्लूं गगनरत्नेभ्यो नमः पूर्वे। स्लूं स्वर्गरत्नेभ्यो नमः दक्षिणे। म्लूं मर्त्यरत्नेभ्यो नमः पश्चिमे। प्लूं पातालरत्नेभ्यो नमः उत्तरे।

इन मन्त्रों से द्रव्य के चारों ओर भिन्न-भिन्न दिशाओं में चार रत्नों का पूजन कर उसके मध्य में—न्लूं नागरत्नेभ्यो नमः—इस मन्त्र से पाँचवें रत्न का पूजन करे। इसके बाद—

ॐ ब्रह्माण्ड-खण्ड-सम्भूतमशेष-रस-सम्भृतम्।
आपूरित-महापात्रं पीयूष-रसमावह ॥
ॐ अखण्डैक-रसानन्दाकरे पर-सुधात्मनि।
स्वच्छन्द-स्फुरणामत्र निधेह्यकुल-रूपिणि ॥
ॐ अकुलस्थामृताकारे सिद्धि-ज्ञान-करे परे ॥
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्न-रूपिणि ॥
ॐ तद्रूपेणैकरस्यञ्च कृत्वार्घ्यं तत्स्वरूपिणि।
भूत्वा परामृताकारं मयि चित्स्फुरणं कुरु ॥

इन मन्त्रों से पात्र को अभिमन्त्रित करे। तदनन्तर—

(१) ऐं प्लूं झ्रौं सौं जूं सः अमृतेऽमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा।

(२) वद वद वाग्वादिनि ऐं।

(३) क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि महाक्षोभं कुरु।

(४) सौः मोक्षं कुरु।

(५) हसौः—इन पाँच मन्त्रों से उस पात्र को अभिमन्त्रित करे।

इस प्रकार पात्र को अभिमन्त्रित कर अकथ त्रिकोण के मध्य में—'हंसः' मन्त्र लिखा हुआ ध्यान करे। फिर इसी स्थान में इष्टदेवता का—मूलं श्रीकामेश्वरशिव-सहिते श्रीमत् त्रिपुरसुन्दरि इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व मम सर्वोपचारसहितां पूजां गृहाण गृहाण—आवाहनादि पाँचों मुद्रायें दिखाता हुआ इस मन्त्र को पढ़ आवाहन करे।

इसके बाद तालत्रय से दिग्बन्धन कर देवता का अवगुण्ठन मुद्रा से अवगुण्ठन करे। फिर योनिमुद्रा से नमस्कार कर धेनुमुद्रा से अमृतमय कर—हसौनमः—मन्त्र से पूजन करे। तदनन्तर—

ऐं क-५ हृच्छक्त्यै नमः आग्नेये। क्लीं ह-६ शिरशक्त्यै नमः ईशाने। सौः स-४ शिखाशक्त्यै नमः वायव्ये। ऐं क-५ कवचशक्त्यै नमः ईशाने। क्लीं ह-६ नेत्रशक्त्यै नमः मध्ये। सौः स-४ अस्त्रशक्त्यै नमः सर्वदिशासु।

इन षडङ्गमन्त्रों से आग्नेयादि कोणों में पूजन कर देवता का सकलीकरण करे। तब पात्र को शङ्खमुद्रा दिखावे। फिर तीन पुष्पाञ्जलियाँ प्रदान कर उसको देवता-स्वरूप समझे।

गुरु आदि पात्रों का स्थापन❀

इसके बाद कलश और श्रीपात्र के बीच में गुरुपात्र, भोग (आत्म) पात्र, शक्तिपात्र, योगिनीपात्र, वीरपात्र, बलिपात्र और आचमनीय आदि पात्रों की स्थापना करे।

गुरुपात्र—कलश के समीप त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल बनावे। सामान्यार्घ्य के जल से—ॐ आधारशक्त्यै नमः—मन्त्र पढ़ उस पर जल छिड़के। 'नमः' मन्त्र से आधार को

❀ सम्प्रदाय तथा देश के भेद के अनुसार गुरु आदि पात्रों की स्थापना में बहुत अधिक मतभेद है। अतएव इनकी स्थापना अपने गुरुदेव की परिपाटी के अनुसार साधक करते हैं। प्रायः नौ पात्र मुख्य माने गए हैं, जो इस प्रकार हैं—१ गुरुपात्र, २ भोगपात्र, ३ शक्तिपात्र, ४ योगिनीपात्र, ५ वीरपात्र, ६ बलिपात्र, ७ पाद्यपात्र, ८ आचमनीयपात्र, ९ श्रीपात्र।

यदि नौ पात्रों की स्थापना न कर सके तो सात पात्रों की स्थापना करे। यथा—१ श्रीपात्र, २ गुरुपात्र, ३ भोगपात्र, ४ शक्तिपात्र, ५ योगिनीपात्र, ६ बलिपात्र, ७ वीरपात्र।

यदि सात पात्र न स्थापित कर सके, तो पाँच पात्र स्थापित करे। यथा—१ श्रीपात्र, २ गुरुपात्र, ३ भोगपात्र, ४ योगिनीपात्र, ५ बलिपात्र।

यदि पाँच पात्र न स्थापित कर सके, तो तीन पात्र स्थापित करे। यथा—१ श्रीपात्र, २ गुरुपात्र, ३ भोगपात्र।

नौ पात्रों की स्थापना सर्वोत्तम, सात पात्रों की स्थापना उत्तम और पाँच पात्रों की स्थापना मध्यम तथा तीन पात्रों की स्थापना निकृष्ट कही गई है। अधिक से अधिक अठारह पात्रों की स्थापना का विधान किया गया है।

धोकर उस मण्डल पर रक्खे। 'फट्' मन्त्र से पात्र को धोकर उसे आधार पर रक्खे। 'नमः' मन्त्र से कलश के अमृत से उसे पूर्ण करे। 'ॐ' से उस पात्र में फूल छोड़े और मूलमन्त्र पढ़ कर गन्ध या चन्दन छोड़े। अंकुशमुद्रा से उसमें तीर्थों का आवाहन करता हुआ यह पढ़े—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि द्रव्येऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥

फिर धेनुमुद्रा दिखा 'वं' बीज जप उसे अमृतमय करे। फिर उसमें शुद्धि आदि छोड़े और 'हंसः शिवः सोहं' यह मन्त्र दश बार जप कर उस पात्र को अभिमन्त्रित करे।

इसी प्रक्रिया से शेष अन्य पात्रों की स्थापना करे।❋ उनको अभिमन्त्रित करने के मन्त्र ये हैं—

भोगपात्र—ॐ ह्रीं हंसः सोहं स्वाहा, शक्तिपात्र—ॐ ह्रीं, योगिनीपात्र—ऐं ह्रीं श्रीं, वीरपात्र—ॐ ह्रौं, बलिपात्र—कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं।

इन मन्त्रों का आठ-आठ बार जप कर पात्रों को अभिमन्त्रित करे।

इसके बाद श्रीपात्र के वामभाग में पाद्यपात्र, अर्घ्यपात्र, आचमनीय पात्र और मधुपर्कपात्र की स्थापना करे। पहले अर्घ्यपात्र की स्थापना करे। यथा—त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल बनावे। 'ॐ आधारशक्तये नमः' से उसका पूजन करे। 'नमः' या मूलमन्त्र से उसे सामान्यार्घ्य के जल से पूर्ण करे।

❋ गुरुपात्रादि की स्थापना की जो विधि यहाँ दी गई है, वह अति संक्षिप्त है। उत्तम यह है कि इन सबकी स्थापना प्रत्येक पात्र का नामोल्लेख करते हुए सामान्यार्घ्य पात्र की भाँति करे।

'वषट्' से उसमें फूल छोड़े। 'नमः' से गन्ध छोड़े। फिर रक्त-चन्दन, सिद्धार्थ (सरसों), जवा पुष्प, दूर्वा छोड़कर मूलमन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित कर योनिमुद्रा से नमस्कार करे।

इसके बाद पाद्यपात्र की स्थापना अर्घ्यपात्र की भाँति करे। उसमें श्यामाक (सांवा), दूर्वा, कुश, अक्षत, विष्णु-क्रान्ता, दुग्ध, गन्ध, पुष्प आदि छोड़ कर धेनुमुद्रा दिखा कर अमृतमय करे और योनिमुद्रा से नमस्कार करे।

तदनन्तर मधुपर्कपात्र की स्थापना अर्घ्यपात्र की भांति करे। उसमें मधु, दधि, घृत छोड़ योनिमुद्रा से नमस्कार करे।

इसके बाद इसी प्रकार आचमनीय पात्र की स्थापना करे। अर्घ्यादि पात्रों की स्थापना यदि इस प्रकार न करे, तो पाद्य और आचमनीय इन दो पात्रों की स्थापना गुरु आदि पात्रों के साथ अवश्य करे। यदि इन पात्रों की स्थापना करे, तो गुरुपात्र आदि के साथ आचमनीय पात्र की स्थापना की जरूरत नहीं है।

गुरु आदि का पूजन-तर्पण

इस प्रकार यथाशक्ति पात्रों का स्थापन कर पूजन और तर्पण करे। पहले अपने आपको गन्धादि से विभूषित करे। फिर शिरस्थ सहस्रार में गुरु-त्रय का ध्यान करे। यथा—

कराभ्यां चिन्मुद्रा सन्मधु-नृ-कपालं च दधतीम्।
द्रुत-स्वर्ण-प्रख्यामरुण-कुसमालेप-वसनाम्॥
कृपापूर्णापाङ्गीमरुण-नयनां बर्बर-कचाम्।
उपेतां तिस्रौघैर्यजत-गुरु-पंक्ति कृत-मतिः॥

इस प्रकार गुरुपंक्ति का ध्यान कर उसका पूजन और तर्पण करे। यथा—

दाहने हाथ की मुद्रा से गन्ध-पुष्प लेकर पूजन करे और बायें हाथ की मुद्रा से शुद्धिखण्ड लेकर गुरुपात्र के अमृत से तर्पण करे। प्रत्येक का तीन-तीन बार पूजन और तर्पण करे। मन्त्र ये हैं—

(१) श्रीगुरु श्रीगुरुपत्न्यम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(२) श्रीपरमगुरु श्रीपरमगुरुपत्न्यम्बा श्रीपादु०।

(३) श्रीपरापरगुरु श्रीपरापरगुरुपत्न्यम्बा श्रीपादु०।

(४) श्रीपरमेष्ठिगुरु श्रीपरमेष्ठिगुरुपत्न्यम्बा श्रीपादु०।

यह पूजन तर्पण अपने शिर पर करे। इसके बाद आनन्द-भैरव और आनन्दभैरवी का पूर्ववत् अपने हृदय में ध्यान करे और उन्हीं मुद्राओं से उनका पूजन और तर्पण हृदय कमल में करे। उनका तर्पण श्रीपात्र के अमृत से करे। मन्त्र ये हैं—

(१) हसक्षमलवरयूं श्रीआनन्दभैरव श्रीपादु०।

(२) सहक्षमलवरयीं श्रीआनन्दभैरवी श्रीपादु०।

प्रत्येक का तीन-तीन बार पूजन-तर्पण करे। इसके बाद हृदय-कमल में त्रिकोण का ध्यान करे। उसके आगे के कोने में 'ॐ रति श्रीपादु०' से रति का पूजन-तर्पण करे, उत्तर के कोने में 'ॐ प्रीति श्रीपादु०' से प्रीति का और दक्षिण के कोने में 'ॐ मनोभवा श्रीपादु०' से मनोभवा का पूजन-तर्पण करे। फिर त्रिकोण के मध्य में इष्टदेवता श्री ललिता का ध्यान करे। तदनन्तर—

मूलं सायुधां सवाहनां सावरणां श्रीकामेश्वरशिवसहितां श्रीमत् त्रिपुरसुन्दरी-श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः—इस मन्त्र से पूजन-तर्पण तीन बार श्रीपात्र के अमृत से करे।

तत्त्वशुद्धि

इसके बाद तत्त्वशुद्धि करे। यथा—भोगपात्र का अमृत हाथों में लेकर हाथों को शुद्ध करे। दाहने हाथ की हथेली में वृत्त के सहित त्रिकोण बनावे। उसके तीनों कोनों में और बीच में शुद्धि के छोटे-छोटे खण्ड रक्खे। फिर—

ह्रीं श्रीं शिवशक्ति सदाशिवेश्वर विद्याकलात्मने अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ऐं (मूल) आत्मतत्त्वेन स्थूलदेहं शोधयामि स्वाहा—यह पढ़कर आगे के कोने का शुद्धिखण्ड बायें हाथ की मध्यमा-अनामा-अंगुष्ठ से उठाकर खा जाय।

ह्रीं श्रीं माया-कला-विद्या-राग-काल-नियति-पुरुषात्मने कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं क्लीं (मूलं) विद्यातत्त्वेन सूक्ष्मदेहं शोधयामि स्वाहा—यह पढ़ वाम कोण का शुद्धिखण्ड पूर्ववत् उठाकर खा जाय।

फिर—ह्रीं श्रीं प्रकृत्यहङ्कार-बुद्धिमनःश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राण-वाक्पाणि-पाद-पायूपस्थ - शब्दस्पर्शरूप-रस-गन्धाकाश-वाय्वग्नि-सलिलभूम्यात्मने यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं सौः (मूलं) शिव-तत्त्वेन परदेहं शोधयामि स्वाहा—यह पढ़कर दक्ष कोण का शुद्धि-खण्ड पूर्ववत् उठाकर खा जाय।

फिर—ह्रीं श्रीं शिवशक्ति-सदाशिवेश्वर-विद्याकलात्मने मायाकला-विद्यारागकालनियति-पुरुषात्मने प्रकृत्यहङ्कारबुद्धि-मनःश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राण-वाक्पाणिपादपायूपस्थ - शब्दस्पर्श रूपरसगन्धाकाश-वाय्वग्निसलिलभूम्यात्मने अं ... क्षं ऐं क्लीं सौः (मूलं) सर्वतत्त्वेन तत्त्व-त्रयान्वितं बीजं शोधयामि स्वाहा—यह पढ़कर बीच का शुद्धिखण्ड खा जाय।

पराविन्दु ग्रहण

इसके बाद व्यापक न्यास करे और हाथ धोकर पराविन्दु को स्वीकार करे। भोगपात्र का कुछ अमृत अन्य पात्र में लेकर उसे दूसरे हाथ से ढँक ले। तब मूलाधार चक्र से कुण्डलनी को जिह्वा के मूल तक आई हुई ध्यान कर उसी में अपने को तन्मय कर यह मन्त्र पढ़े—

ॐ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि योऽहमस्मि अहमस्मि अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा।

यह मन्त्र पढ़ तत्त्वमुद्रा से उस पात्र से एक बूँद अमृत लेकर पान करे।

फिर यह मन्त्र पढ़े—ॐ त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु मां। अवतु वक्तारम्।

यह मन्त्र पढ़ पुनः उसी प्रकार एक बूँद पान कर जाय। फिर यह मन्त्र पढ़े—ॐ यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः। छन्देभ्योऽध्यमृतात्सम्बभूव। स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु। अमृतस्य देव धारणो भूयासम्। शरीरे मे विचर्षणम्। जिह्वा मे मधुमत्तमा। कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवम्। ब्रह्मणः केशोऽसि मेधया पिहतः। श्रुतं मे गोपाय। आवहन्ती वितन्वाना।

यह मन्त्र पढ़ पुनः उसी प्रकार एक विन्दु स्वीकार करे। इसके हाथ धोकर श्रीपात्र का अमृत अपने ऊपर छिड़क इष्टदेवता का पूजन करे। इसके लिए यन्त्रराज की स्थापना करे। यदि इष्टदेवता का यन्त्र न हो तो ताम्रपत्र पर उसे अष्टगन्ध से बना ले।

यन्त्रराज की स्थापना

अपने सामने विशेषार्घ्य-पात्र के पृष्ठ-भाग में जो सिंहासन रखा है, उस पर यन्त्रराज का निम्न प्रकार से स्थापन करे। यदि सिंहासन न हो, तो पहले उस स्थान पर जल छिड़के। सामान्यार्घ्य के जल से—ऐं ह्रीं नमः—यह मन्त्र पढ़कर जल छिड़के, इसके बाद उस स्थान पर त्रिपद या चौकी रक्खे। यदि सिंहासन हो, तो उस पर अष्टदल-मण्डल-खचित एक तश्तरी स्थापित करे। इस मण्डल में अष्टगन्ध-लिप्त अक्षतों से ज्ञान-मुद्रा द्वारा पीठ का पूजन करे।

पीठ-पूजा

पीठपूजा—अष्टदलकमल के मध्य में पीठ की शक्तियों का पूजन करे। यथा—

मं मण्डूकाय नमः। कां कालाग्नि-रुद्राय नमः। मूं मूलप्रकृत्यै नमः। आं आधार-शक्त्यै नमः। कूं कूर्माय नमः। अं अनन्ताय नमः। वं वराहाय नमः। पृं पृथिव्यै नमः। अं अमृतार्णवाय नमः। अं...द्वं नवरत्नमय-मणिद्वीपाय नमः। नंनन्दनोद्यानाय नमः। स्वं स्वर्ण-प्राकाराय नमः। चि चिन्तामणि-मण्डपाय नमः। रं रत्न-वेदिकायै नमः। रं रत्न-सिंहासनाय नमः।

इसके बाद मण्डल के चारों कोनों में पूजा करे—

धं धर्माय नमः आग्नेये। ज्ञां ज्ञानाय नमः नैर्ऋत्ये। वैं वैराग्याय नमः वायव्ये। ऐं ऐश्वर्याय नमः ईशाने।

इसके बाद मण्डल की पूर्वादि चारों दिशाओं में—

अं अधर्माय नमः पूर्वे। अं अज्ञानाय नमः दक्षिणे। अं अवैराग्याय नमः पश्चिमे। अं अनैश्वर्याय नमः उत्तरे।

इसके बाद पुनः मण्डल के बीच में—

ह्रीं आदिमायायै नमः। विं विद्यायै नमः। आं आनन्द-कन्द-पद्माय नमः। सं संविन्नालाय नमः। प्रं प्रकृतिमय-पत्रेभ्यो नमः। विं विकारमय-केसरेभ्यो नमः। रं वह्नि-मण्डलाय नमः। अं सूर्य-मण्डलाय नमः। उं सोम-मण्डलाय नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः।

इसके बाद आग्नेयादि चारों कोनों में—

आं आत्मने नमः आग्नेये। अं अन्तरात्मने नमः वायव्ये। पं परमात्मने नमः नैऋत्ये। ह्रीं ज्ञानात्मने नमः इशाने।

इसके बाद पूर्वादि क्रम से दिशा-विदिशाओं में—

इं इच्छायै नमः पूर्वे। ज्ञां ज्ञानायै नमः आग्नेये। क्रिं क्रियायै नमः दक्षिणे। कां कामिन्यै नमः वायव्ये। कां कामदायै नमः पश्चिमे। रं रत्यै नमः नैऋत्ये। रं रतिप्रियायै नमः उत्तरे। नं नन्दायै नमः ईशाने।

इसके बाद मध्य में—

मं मनोन्मन्यै नमः। ऐं परायै अपरायै ह्सौः सदाशिव-महाप्रेत-पद्मासनाय नमः।

इस प्रकार पीठ-शक्तियों का पूजन कर मण्डल के बीच में पुष्प रख उस पर चाँदी की तश्तरी में रक्तचन्दन से बनाये अथवा ताम्र, रौप्य या स्वर्ण-पत्र पर अङ्कित श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी के यन्त्र को रखे।

इष्ट-देवता का आवाहन

इसके बाद कच्छप-मुद्रा से गन्ध-लिप्त पुष्प लेकर उस हाथ को हृदय पर रक्खे और हृदयकमल में कामेश्वर-शिव सहित श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी का ध्यान करे और उन्हें सुषुम्ना मार्ग से सहस्रार

में ले जाय। वहाँ उन्हें प्रणाम करे और नासिका मार्ग से उन्हें उसी हाथ के पुष्प में ले आवे और यह पढ़े—

महापद्म - वनान्तस्थे कारणानन्द - विग्रहे।
सर्व-भूत-हिते मातरेह्येहि परमेश्वरि॥
देवेशि भक्ति-सुलभे परिवार-समन्विते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत् त्वं सुस्थिरा भव॥

यह प्रार्थना कर उस फूल को यन्त्र पर रख दे और इष्टदेवता का आवाहन आदि करे। यथा—

आवाहन—मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिते श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दरि देवि इहागच्छ इहागच्छ (आवाहनी मुद्रा दिखावे)।

मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिते श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दरि देवि इह तिष्ठ इह तिष्ठ (स्थापिनी मुद्रा)।

मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिते श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दरि देवि इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि (सन्निधापिनी मुद्रा)।

मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिते श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दरि देवि इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व (संनिरोधिनी मुद्रा)।

मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिते श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दरि देवि सम्मुखीकृता भव (सम्मुखीकरणी मुद्रा)।

अब देवता के हृदय आदि अंगों में षडङ्ग-मन्त्रों का न्यास कर उसका सकलीकरण करे। यथा—

सकलीकरण—ऐं क-५ हृच्छक्त्यै नमः। क्लीं ह-६ शिरशक्त्यै नमः। सौः स-४ शिखाशक्त्यै नमः। ऐं क-५ कवच-शक्त्यै नमः। क्लीं ह-६ नेत्रशक्त्यै नमः। सौः स-४ अस्त्रशक्त्यै नमः। मूलं श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दरि देवि सकली-कृता भव।

अवगुण्ठन—मूलं श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरि देवि अवगुण्ठिता भव (अवगुण्ठनी-मुद्रा चारों ओर घुमाकर अवगुण्ठन करे।)

संरक्षण—मूलं श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दरि देवि संरक्षिता भव। (यह पढ़ छोटिका मुद्रा से संरक्षित करे।)

अमृतीकरण—मूल ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौं स्हौं अं आं...लं क्षं श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दरि देवि अमृतीकृता भव। (यह पढ़ धेनुमुद्रा दिखाकर अमृतीकरण करे।)

परमीकरण—मूलं श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दरि देवि परमीकृता भव। (यह पढ़ महामुद्रा दिखा यह ध्यान करे कि देवता के मस्तक पर सामान्यार्घ्य-पात्र के जल का तीन बार वर्षण हुआ।)

प्राणप्रतिष्ठा—आवाहन से परमीकरण तक की क्रियायें करने के बाद लेलिहानी मुद्रा से पूजा यन्त्र में देवता की प्राण-प्रतिष्ठा करे—ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः हौं श्रीकामेश्वरशिवसहित श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दरि पञ्चप्राणाः इह स्थिताः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः श्रीकामेश्वर-शिव-सहितश्रीमत्त्रिपुर-सुन्दरि जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः श्रीकामेश्वर-शिव-सहित-श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दरि सर्वेन्द्रियाणि, ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः श्रीकामेश्वर - शिव-सहित श्रीमत्त्रिपुर - सुन्दरि वाङ्-मनो-चक्षु-श्रोत्र-घ्राण-प्राण-पदानि इहैवागत्य सुखं चिर तिष्ठन्तु स्वाहा। (यह मन्त्र तीन बार पढ़े)।

मुद्रा-प्रदर्शन— अब अंकुश, पाश, चाप, बाण, कमल आदि मुद्रायें दिखावे।

इष्टदेवता का षोडशोपचार पूजन

इसके बाद आसनादि षोडश उपचारों से देवता का पूजन करे। पहले वह देवता का स्वागत करे। यथा—हे श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दरि आगतं सु स्वागतं—यह कह दोनों हाथों की अँगुलियाँ फैला उन्हें अधोमुखकर स्वागत करे।

इसके बाद—मूलं श्रीमत्त्रिपुर सुन्दरि-देवि इदमासनं आस्यताम्—यह वाक्य कहकर देवता के वाम भाग में पद्ममुद्रा से आसनरूप एक पुष्प प्रदान करे।

आवरण-भावना—इसके बाद [१] श्री-यन्त्र के मध्य-त्रिकोण के बिन्दु—'सर्व-काम-प्रद सर्वानन्द-मय चक्र'—में श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दरी ललिता का ध्यान कर उनके चारों ओर कामेश्वरी आदि सोलह नित्याओं (परा रहस्य-योगिनियों) की भावना करे।

[२] मध्य त्रिकोण—'सर्व-सिद्धिप्रद चक्र'—की तीन रेखाओं में कामेश्वरी आदि तीन शक्तियों (रहस्य-योगिनियों) का ध्यान करे।

[३] अष्टदल—'सर्वरोग-हर चक्र'—के दलों में वशिनी आदि आठ शक्तियों (रहस्य-योगिनियों) की भावना करे।

[४] अन्तर्दशार (दस त्रिकोण)—'सर्वरक्षाकर-चक्र'—के कोणों में सर्वज्ञा आदि दस शक्तियों (निगर्भ-योगिनियों) का;

[५] बहिर्दशार (दस त्रिकोण)—'सर्वार्थ-साधक-चक्र'—के कोणों में सर्वसिद्धि-प्रदादि शक्तियों (कुल-योगिनियों) का और—

[६] चतुर्दशार (चौदह) त्रिकोण—'सर्व-सौभाग्यप्रद चक्र'—के कोणों में सर्व-संक्षोभिणी आदि चौदह शक्तियों (सम्प्रदाय योगिनियों) का ध्यान करे।

[७] अष्टदल—'सर्व-संक्षोभण चक्र'—के दलों में अनङ्गकुसुमा आदि आठ शक्तियों (गुप्ततर योगिनियों) की भावना करे।

[८] षोडशदल—'सर्वाशापूरक चक्र' के दलों में कामाकर्षिणी आदि सोलह शक्तियों (गुप्त-योगिनियों) का और—

[९] भूपुर—'त्रैलोक्य-मोहन चक्र'—की बाह्य रेखा में अणिमादि सिद्धियों, मध्य रेखा में ब्राह्मी आदि शक्तियों और भीतरी रेखा में ब्राह्मी आदि के क्षोभणादि गुप्तास्त्रों का ध्यान करे।

इस प्रकार आवरण-वृन्द को यथा-क्रम स्थापित कर पाद्यादि उपचारों से इष्टदेवता का पूजन करे। यथा—

१ पाद्य—मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि—यह पढ़कर पाद्यपात्र❋ का सब कुछ अनामा-अंगुष्ठ की मुद्रा से देवता के चरणों में पाद्य प्रदान करे।

२ अर्घ्य—मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दर्यै इदं अर्घ्यं स्वाहा—यह पढ़कर अर्घ्य-पात्र का सब कुछ सब अँगुलियों की मुद्रा से देवता के शिर में अर्घ्य प्रदान करे।

३ आचमन—मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः इदमाचमनं स्वधा—यह पढ़कर आचमनीय पात्र का जल लेकर कनिष्ठा-रहित चार अंगुलियों की आचमन-मुद्रा से आचमन के लिए देवता के मुख में प्रदान करे।

४ मधुपर्क—मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दर्यै इदं मधुपर्कं स्वधा—यह पढ़कर मधुपर्क पात्र से मधुपर्क लेकर अधोमुखी अनामा और अंगुष्ठ की मुद्रा से देवता के मुख में प्रदान करे।

पुनः आचमन—मूलं श्रीकामेश्वरशिव-सहितायै श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दर्यै इदं शुद्धमाचमनीयं समर्पयामि—यह पढ़कर आचमनीय पात्र से जल लेकर पूर्ववत् पुनः आचमन करावे।

५ स्नान—मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः—यह पढ़कर ज्ञानमुद्रा से गन्धाक्षत छोड़ देवता को स्नान-मण्डप में ले जाने की भावना करे।

❋ पाद्य-पात्र आदि यदि न स्थापित किए हों, तो सामान्यार्घ्य का जल एक पात्र में लेकर उसमें पाद्यादि के द्रव्य छोड़कर पाद्य आदि प्रदान करे।

फिर—मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः इदं हरिद्रादिद्रव्य तैल च समर्पयामि—ज्ञान-मुद्रा से गन्धाक्षत छोड़कर ये द्रव्य प्रदान करे। तब—मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः स्नानं समर्पयामि— यह पढ़ कनिष्ठा-रहित दाहने हाथ की शेष अंगुलियों की मूठ से सामान्यार्घ्य के जल से स्नान करावे।

६ वस्त्र—मूलं श्रीकामेश्वरशिव-सहितायै श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः वस्त्रं समर्पयामि नमः— यह मन्त्र पढ़ कर अँगूठे से छुई हुई अनामा और मध्यमा से वस्त्र प्रदान करे।

७ यज्ञोपवीत—मूलं श्रीकामेश्वरशिव-सहितायै श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि—इस मन्त्र से वस्त्र-प्रदान-मुद्रा से यज्ञोपवीत प्रदान करे।

८ आभूषण—मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहिताय श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः भूषणानि समर्पयामि— इस मन्त्र से दाहने अँगूठे और अनामिका के योग से बनी मुद्रा से आभूषण प्रदान करे।

मूल श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः— यह मन्त्र पढ़ यह भावना करे कि आवरण देवताओं के साथ इष्ट-देवता ने महाचक्र का आरोहण किया है और चक्र के बिन्दु में प्रसन्न बैठी है।

९ गन्ध—मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीमत्त्रिपुसुन्दर्यै नमः गन्धं समर्पयामि—इस मन्त्र से कनिष्ठा और अगुष्ठ की बनी मुद्रा-द्वारा कपूर-मिश्रित चन्दन देवता के अङ्ग में प्रदान करे।

१० अक्षत—मूलं श्रीकामेश्वर-शिव-सहितायै श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि—इस मन्त्र से सब अंगुलियों के संयोग से बनी मुद्रा-द्वारा अक्षत प्रदान करे।

११ पुष्प—मूल श्रीकामेश्वर-सहितायै श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः पुष्प समर्पयामि वौषट्—इस मन्त्र से तर्जनी और अंगुष्ठ की मुद्रा से पुष्प प्रदान करे।

१२ धूप—सामान्यार्घ्य के जल से 'फट्' मन्त्र पढ़कर धूप-पात्र का प्रोक्षण करे। 'नमः' मन्त्र पढ़ गन्ध-पुष्प से उसका पूजन करे। धूपपात्र को अपने सामने रखकर 'र' बीज का उच्चारण कर उस पर अग्नि रक्खे। मूलमन्त्र से अग्नि में दशाङ्ग धूप छोड़े। फिर बायें हाथ से घण्टा बजाते और दाहिने हाथ की तर्जनी और अँगूठे की मुद्रा से धूपपात्र लिये देवता का गुण-कीर्तन करते नाभि-देश से उसको धूप प्रदान करे। यथा—

ॐ वनस्पति-रसोपेतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः।
आघ्रेयः सर्व-देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

मूलं साङ्गायै सपरिवारायै श्रीकामेश्वर-सहितायै श्रीमत्त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः धूपं समर्पयामि—यह पढ़ धूप प्रदान करे और धूपपात्र देवता के वामभाग में रख उस पर सामान्यार्घ्य का जल छोड़ दे।

१३ दीप—घृतपूर्ण दीपपात्र लेकर उसमें मूलमन्त्र के अक्षरों की संख्या के तन्तुओं की बत्ती रक्खे। 'फट्' मन्त्र से सामान्यार्घ्य के जल से प्रोक्षण करे। प्रणव से उसे जलावे। घण्टा बजाता हुआ नेत्रों से लेकर पाद-पर्यन्त दीप दिखावे। यथा—

ॐ सु-प्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः।
स-बाह्याभ्यन्तर-ज्योतिर्दीपोऽयं प्रति-गृह्यताम् ॥

मूलं साङ्गायै सपरिवारायै श्रीकामेश्वर-सहितायै श्रीमत् त्रिपुर सुन्दर्यै नमः दीपं समर्पयामि—यह पढ़ दीप प्रदान कर दीप-

पात्र को देवता के दाहने रख दे। सामान्यार्घ्य के जल से उत्सर्ग कर मध्यमा अंगुष्ठ की दीपमुद्रा दिखावे।

१४ नैवेद्य—इसके बाद ग्रासमुद्रा से बायें हाथ में शुद्ध तीर्थ का पात्र ले और दाहने हाथ में शुद्ध शुद्धिखण्ड लेकर—मूलं शुद्धि-सहितमिदमासवं श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी-देवतायै निवेदयामि।

यह पढ़ उस आसव को देवता के मुख में निवेदित करे। फिर उस पात्र को अपने बायें या सामने आधार पर रख हाथ से ढँक नमस्कार करे और यह पढ़े—

ॐ शुद्धासव-रसास्वाद - परमानन्द-निर्भरे।
अपारे भवसंसारे पाहि मां परमेश्वरि ॥

इसके बाद देवता के सम्मुख या दाहने जल से चतुरस्र का मण्डल बनावे। उस पर नैवेद्य पात्र रक्खे। नैवेद्य-द्रव्य विविध प्रकार का हो। 'फट्' मन्त्र पढ़कर चक्रमुद्रा से उसकी रक्षा करे। 'ॐ ह्रीं नमः' इस मन्त्र को पढ़ सामान्यार्घ्य जल से उसका प्रोक्षण करे। मूलमन्त्र पढ़ उसका वीक्षण करे। दाहने हाथ के ऊपर बाँया हाथ रक्खे। इस मुद्रा से नैवेद्य पात्र को ढँक वायुबीज 'य' का सोलह बार जप करे और यह समझे कि वायु ने उसके दोषों का शोषण कर डाला। फिर उसी तरह बायें हाथ पर दाहिना हाथ रक्खे। इस मुद्रा से नैवेद्य पात्र को दिखाकर अग्निबीज 'रं' का सोलह बार जप करे और यह समझे कि अग्नि ने उसके दोषों को जला डाला है।

तदनन्तर बायें करतल में अमृतबीज 'वं' का सोलह बार जप करे और यह समझे कि नैवेद्य अमृत-वृष्टि से भर गया है। मूलमन्त्र से उसका प्रोक्षण जल से करे। धेनुमुद्रा दिखावे। मूल-मन्त्र से आठ बार अभिमन्त्रित करे। गन्ध-पुष्प से उसका पूजन करे। देवता के मुख से निकलते हुए तेज का स्मरण करे। बायें

अँगूठे से नैवेद्य पात्र का स्पर्श कर और दाहने हाथ से जल लेकर—

ॐ सत्पात्र-सिद्धं सुहविर्विविधानेक-भक्षणम्।
निवेदयामि देवेशि सानुगायै गृहाण भो॥

मूलं साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै श्रीकामेश्वर-शिव सहितायै श्रीमत् त्रिपुरसुन्दर्यै नमः नैवेद्य समर्पयामि--यह पढ़ कर देवता के दाहने हाथ में जल छोड़कर बायें हाथ से कमलमुद्रा और दाहने हाथ से ग्रासमुद्रा दिखावे। ग्रास-मुद्रायें ये हैं—

मूलं ॐ प्राणाय स्वाहा—कनिष्ठा-अनामा-अंगुष्ठ से।
मूलं ॐ अपानाय स्वाहा—वृद्धा-मध्या-तर्जनी से।
मूलं ॐ समानाय स्वाहा—अंगुष्ठ-अनामा-मध्यमा से।
मूलं ॐ उदानाय स्वाहा—अनामा-अंगुष्ठ-मध्यमा-तर्जनी से।
मूलं ॐ व्यानाय स्वाहा—सब अँगुलियों से।

इस प्रकार पाँच आहुतियाँ देकर यह भावना करे कि उसके और देवता के बीच में यवनिका पड़ा है और देवता भोजन कर रहा है। अब हाथ में फूल लेकर यह पढ़कर पुष्पांजलि प्रदान करे—

१५ पुष्पाञ्जलि—

ब्रह्मेशाद्यैरमर-निकरैः स्तूयमानैः समन्तात्।
चञ्चद्वाल-व्यजन-निकरैः वीज्यमानां सखीभिः॥
मर्म-क्रीडा-प्रहसन-परा पंक्ति-भोक्त्रीं हसन्तीम्।
भुंक्ते पात्रे कनक-घटिते षड्-रसान् चिद्विलासान्॥

पुष्पाञ्जलि देकर जल प्रदान करे—

आचमन—

ॐ समस्त-देव-देवेशि सर्वतृप्ति-करं परम्।
अखण्डानन्द-सम्पूर्णं गृहाण जलमुत्तमम्॥

मूलं साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सवाहनायै श्रीकामेश्वर शिव सहितायै श्रीमत् त्रिपुरसुन्दर्यै नमः जलं समर्पयामि।

यह पढ़ कर्पूरादि सुवासित जल या सामान्यार्घ्य का जल स्वर्णादि पात्र में प्रदान करे। फिर—

मूलं हे श्रीमत् त्रिपुरसुन्दरि मातः तृप्तासि?— यह कह प्रश्न करे।

इसके बाद आचमनीय पात्र का जल लेकर—

'ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा' यह पढ़कर आचमन मुद्रा से वह जल देवता के मुख में छोड़े।

१६ तांबूल—इसके बाद सामान्यार्घ्य का जल कर्पूरादि वीटिका पर छिड़क कर 'वं' बीज का उच्चारण कर धेनुमुद्रा दिखा उसे अमृतमय कर देवता के आगे रख बायें हाथ से छूकर देवता को अर्पित करे। यथा—

एला-लवङ्ग - कर्पूर - नागवल्ली - दलैर्युतम्।
पूजा-भागेरितं देवि ताम्बूलं गृह्यतां नमः॥

मूलश्रीकामेश्वर शिव-सहितायै श्रीमत् त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ताम्बूल समर्पयामि—यह पढ़ तत्वमुद्रा से देवता के मुख में ताम्बूल प्रदान करे।

पुष्पाञ्जलि—मूलं श्रीकामेश्वर शिव-सहितायै श्रीमत् त्रिपुरसुन्दर्यै नमः मन्त्र-पुष्पाञ्जलि समर्पयामि नमः—इस मन्त्र से देवता को स्वर्ण-पुष्पों के अभाव में पीत पुष्पों की पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। यह पुष्पाञ्जलि पैर, गुह्य, हृदय, मुख और शिर में अलग-अलग मन्त्र पढ़कर पाँच बार प्रदान करे।

१७ तर्पण—इसके बाद देवता का तर्पण श्रीपात्र से करे। वाम तत्त्वमुद्रा में शुद्धिखण्ड और दक्ष ज्ञानमुद्रा में गन्धाक्षत लेकर—मूलं श्री कामेश्वर शिव-सहितां [illegible]

श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीं पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।' यह पढ़कर तीन या सात बार बिन्दु में देवता का पूजन और तर्पण करे।

१८ पुनः मुद्रा-प्रदर्शन—इष्टदेवता के हृदय को योनिमुद्रा, मुख को क्षोभिणी, भ्रूमध्य को द्राविणी, ललाट को आकर्षिणी, ब्रह्मरन्ध्र को वशिनी तथा आह्लादिनी आदि मुद्रायें दिखावे।

आवरण-पूजन

पहले भगवती के पीछे मूल त्रिकोण की पूर्व-रेखा के पास, विमला और जयिनी के बीच में अरुणा वाग्देवता के निकट दक्षिण से उत्तर की ओर तीन पंक्तियों में क्रमशः दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ गुरुओं का ध्यान करे। फिर उन्हें 'ॐ श्रीगुरु-मण्डलाय नमः' से पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। फिर—

ते रक्त-माल्याम्बर-भूषणाद्यैः स्वलंकृताः पङ्कज-विष्टरस्थाः।
सर्वे च साक्षम्बत-योग-निष्ठाः प्राप्ताखिलैश्वर्य-गुणाष्ट-कार्याः

इस प्रकार गुरुओं का ध्यान कर ज्ञानमुद्रा से गन्धाक्षत और तत्त्वमुद्रा से शुद्धिखण्ड लेकर गुरुपात्र से पहले दिव्यौघ के गुरुओं❀ का प्रथम पंक्ति में पूजन और तर्पण करे।

पहले उन्हें—दिव्यौघाख्य-गुरुभ्यो नमः—यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। फिर पहली पंक्ति में नीचे के मन्त्रों से प्रत्येक का पूजन और तर्पण करे—

ॐ प्रकाशानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

❀ यहाँ गुरुपंक्ति की पूजा केवल पूर्णाभिषिक्त साधक ही करते हैं। साधारण साधक अगले पृष्ठ पर दिए मन्त्रों से गुरु, परम गुरु परापर गुरु और परमेष्ठि गुरुओं का ही पूजन-तर्पण करते हैं।

ॐ परमेशानन्दनाथ श्रीपादु०।
ॐ परशिवानन्दनाथ श्रीपादु०
ॐ कामेश्वरानन्दनाथ श्रीपादु०।
ॐ मोक्षानन्दनाथ श्रीपादु०।
ॐ कामानन्दनाथ श्रीपादु०।
ॐ अमृतानन्दनाथ श्रीपादु०।

इसके बाद—ॐ सिद्धौघाख्य-गुरुभ्यो नमः—यह पढ़कर सिद्धौघ के गुरुओं को पुष्पाञ्जलि दे और दूसरी पंक्ति में पूर्ववत् उनका पूजन और तर्पण करे—

ॐ ईशानानन्दनाथ श्रीपादुकां पूज०।
ॐ तत्पुरुषानन्दनाथ श्रीपादु०।
ॐ अघोरानन्दनाथ श्रीपादु०।
ॐ वामदेवानन्दनाथ श्रीपादु०।
ॐ सद्योजातानन्दनाथ श्रीपादु०।

इसके बाद—ॐ मानवौघाख्य गुरुभ्यो नमः— यह पढ़ पुष्पाञ्जलि प्रदान करे और तीसरी पंक्ति में पूजन तर्पण करे—

ॐ गगनानन्दनाथ श्रीपादुकां पूज०।
ॐ विश्वानन्दनाथ श्रीपादु०।
ॐ विमलानन्दनाथ श्रीपादु०।
ॐ मदनानन्दनाथ श्रीपादु०।
ॐ आत्मानन्दनाथ श्रीपादु०।
ॐ प्रियानन्दनाथ श्रीपादु०।

इसके बाद स्वगुरु आदि का पूजन-तर्पण करे। यथा—

(१) अमुक स्वगुरुनाथ तच्छक्त्यम्बा श्रीपादु०।
(२) अमुक परमगुरुनाथ श्रीपादु०।

(३) अमुक परापरगुरुनाथ श्रीपादु०।

(४) अमुक परमेष्ठिगुरुनाथ श्रीपादु०।

(१) अ ॐ प्रथमावरण-देवताभ्यो नमः' से पुष्पांजलि देकर श्रीयन्त्र के मध्य त्रिकोण के बिन्दु—'सर्व-काम-प्रद सर्वानन्द-मय चक्र'— में श्रीपात्र से तीन बार पूजन-तर्पण करे। यथा—

मूलं श्री त्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

तदनन्तर वहीं श्री जगदम्बा के चारों ओर १६ नित्याओं (परारहस्य-योगिनियों) का पूजन तर्पण करे। तर्पण योगिनीपात्र से करे। यथा—

१ श्री कामेश्वर-शिव-सहिता मूलं श्रीकामेश्वरी श्रीपादुकां पूज० तर्प० नमः। २ मूलं श्रीभगमालिनी०। ३ मूलं श्रीनित्यक्लिन्ना०। ४ मूलं श्रीभेरुण्डा०। ५ मूलं श्रीवह्नि-वासिनी०। ६ मूलं श्रीमहा-विद्येश्वरी०। ६ मूलं श्रीशिव-दूती०। ८ मूलं श्रीत्वरिता०। ९ मूलं श्रीकुल-सुन्दरी०। १० मूलं श्रीनित्या०। ११ मूल श्रीनीलपताकिनी०। १२ मूल श्री विजया०। १३ मूलं श्रीसर्व-मङ्गला०। १४ मूलं श्रीज्वाला-मालिनी०। १५ मूलं श्री विचित्रा०। १६ मूलं श्रीत्रिपुर-सुन्दरी०। अब वहीं षडङ्गों का पूजन और तपण करे। तपण श्रीपात्र से करे—

ॐ ऐं क-५ हृच्छक्ति श्रीपादुकां पूज० आग्नेये।

ॐ क्लीं ह-६ शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूज० वायव्य।

ॐ सौः स-४ शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूज० नैऋत्ये।

ॐ ऐं क-५ कवचशक्ति श्रीपादुकां पूज० ईशाने।

ॐ क्लीं ह-६ नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूज० पूर्वे।

ॐ सौः स-४ अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूज० सर्वदिशासु।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

यह पढ़कर देवता को पुष्पाञ्जलि छोड़े और—पूजिताः तर्पिताः सन्तु—से विशेषार्घ्य का द्रव्य छोड़कर तृप्त करे।

(२) इसके बाद 'ॐ द्वितीयावरण-देवताभ्यो नमः' से पुष्पाञ्जलि देकर यन्त्र के मध्य—'सर्व-सिद्धि-प्रद-चक्र'—की तीन रेखाओं में योगिनी-पात्र से तीन शक्तियों (अति रहस्य-योगिनियों) का पूजन-तर्पण करे। यथा—

मूलं श्री रुद्र-सहित श्रीकामेश्वरी श्री पा०

मूलं श्री विष्णु-सहित श्री वज्रेश्वरी श्री पा०

मूलं श्रीब्रह्मा-सहित श्री भगमालिनी श्रीपा०

मूलं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥

पुष्पाञ्जलि दे और—पूजिताः तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे।

(३) 'ॐ तृतीयावरण-देवताभ्यो नमः' से पुष्पाञ्जलि देकर अष्टदल—'सर्व-रोग-हर-चक्र'—के दलों में आठ शक्तियों (रहस्य-योगिनियों) का पूजन-तर्पण पूर्ववत् करे। तर्पण योगिनी-पात्र से करे। यथा—

मूलं वशिनी श्रीपादुकां पूज०।

मूलं कौमारी श्रीपादुकां पूज०।

मूलं मोहिनी श्रीपादुकां पूज०।

मूलं विमला श्रीपादुकां पूज०।

मूलं अरुणा श्रीपादुकां पूज०।

मूलं जयिनी श्रीपादुकां पूज०।

मूलं सर्वेशी श्रीपादुकां पूज०।

मूलं कौलिनी श्रीपादुकां पूज०।

मूलं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥

पुष्पाञ्जलि दे और—पूजिताः तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे।

(४) 'ॐ चतुर्थावरण-देवताभ्यो नमः' से पुष्पाञ्जलि देकर अन्तर्दशार (दस त्रिकोण)—'सर्वरक्षा-कर-चक्र'—के कोणों में दस शक्तियों (निगर्भ-योगिनियों) का उसी प्रकार पूजन-तर्पण करे। इनका तर्पण योगिनीपात्र से करे।

मूलं सर्वज्ञा श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्व-शक्ति श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्वैश्वर्य-फलप्रदा श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्वज्ञानमयी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्व-व्याधि-नाशिनी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्वाधार-स्वरूपा श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्वपाप-हरा श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्वानन्द-मयी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्वरक्षा-करा श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्वेप्सितार्थ-फलदा श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागत-वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि दे और—पूजिताः तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे।

(५) 'ॐ पञ्चमावरण-देवताभ्यो नमः'—से पुष्पाञ्जलि देकर बहिर्दशार (दस त्रिकोण)—'सर्वार्थ-साधक-चक्र'— के कोणों में दस शक्तियों (कुल-योगिनियों) का पूर्ववत् पूजन और तर्पण करे। इनका तर्पण योगिनी-पात्र से करे—

मूलं सर्वसिद्धि-प्रदा श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्व-सम्पत्प्रदा श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्व-प्रियङ्करी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्व-मङ्गल-कारिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्व-काम-प्रदा श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्व-दुःखविमोचिनी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्वमृत्यु-प्रशमनी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्व-विघ्न-निवारिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्वाङ्गसुन्दरी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्व-सौभाग्य-प्रदा श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥
पुष्पाञ्जलि देकर—पूजिताः तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे।

(६) 'ॐ षष्ठमावरण-देवताभ्यो नमः' से पुष्पाञ्जलि प्रदान करे और चतुर्दशार (चौदह) त्रिकोण—'सर्व-सौभाग्य-प्रद' चक्र के कोणों में १४ शक्तियों (सम्प्रदाय-योगिनियों) का पूजन-तर्पण करे। तर्पण योगिनीपात्र से करे—

मूलं सर्व-संक्षोभिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्व-द्राविणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्वाकर्षिणी श्रीपादुकां पूज०
मूलं सर्वाह्लादकरी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्व-सम्मोहिनी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्व-स्तम्भिनी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्व-जृम्भिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्व-वशङ्करी श्रीपादुकां पू० ।
मूलं सर्व-रञ्जिनी श्रीपादुकां पूज० ।

मूलं सर्वोन्मादिनी श्री पादुकां पूज० ।
मूलं सर्वार्थ-साधिनी श्रीपादुकां पूज० ।
मूल सर्व-सम्पत्ति-पूरिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूल सर्व मन्त्र-मयी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं सर्व-द्वन्द्व-क्षयङ्करी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम् ॥
पुष्पाञ्जलि देकर—पूजिताः तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे।

(७) 'ॐ सप्तमावरणदेवताभ्यो नमः'—से पुष्पाञ्जलि देकर अष्टदल—'सर्व-संक्षोभण-चक्र'—के दलों में आठ शक्तियों (गुप्ततर-योगिनियों) का पूजन तर्पण करे। तर्पण योगिनी-पात्र से करे—

मूलं अनङ्गकुसुमा श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं अनङ्गमेखला श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं अनङ्गमदना श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं अनङ्गमदनातुरा श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं अनङ्गरेखा श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं अनङ्गवेगा श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं अनङ्गांकुशा श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं अनङ्गमालिनी श्रीपादुकां पूज० ।

मूलं अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥
पुष्पाञ्जलि देकर—पूजिताः तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे।

(८) 'ॐ अष्टमावरण-देवताभ्यो नमः' से पुष्पाञ्जलि देकर षोडश दल—'सर्वाशा-परिपूरक चक्र'—के दलों में सोलह शक्तियों (गुप्त योगिनियों) का पूजन-तर्पण करे। तर्पण योगिनी-पात्र से करे—

मूलं कामाकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं बुद्ध्याकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं अहङ्काराकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं शब्दाकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूल स्पर्शाकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं रूपाकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं रसाकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं गन्धाकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं चित्ताकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं धैर्याकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूल नामाकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं बीजाकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं शरीराकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं अमृताकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं स्मृत्याकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं आत्माकर्षिणी श्रीपादुकां पूज० ।

मूलं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि दे और—पूजिताः तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे।

(९) 'ॐ नवमावरण-देवताभ्यो नमः' से पुष्पाञ्जलि देकर भूपुर—'त्रैलोक्य मोहन चक्र'—की बाह्य, मध्य और भीतरी रेखाओं में क्रमशः अणिमादि अष्टसिद्धियों, ब्राह्मी आदि अष्ट महाशक्तियों और क्षोभणादि मुद्राशक्तियों का पूजन-तर्पण करे। तर्पण योगिनी पात्र से करे—

बाह्य रेखा में—

मूलं अणिमा-सिद्धि श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं लघिमा „ „
मूल महिमा „ „
मूलं ईशित्व „ „
मूलं वशित्व „ „
मूलं प्राकाम्य „ „
मूलं भुक्ति „ „
मूलं इच्छा „ „

मध्य रेखा में—

मूलं ब्राह्मी श्रीपादुकां पूज० ।
मूलं माहेश्वरी „ „
मूलं कौमारी „ „
मूलं वैष्णवी „ „
मूलं वाराही „ „
मूलं चामुण्डा „ „
मूलं माहेन्द्री „ „
मूलं महालक्ष्मी „ „

मूलं अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागत-वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि दे और—पूजिताः तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे ।

(१०) 'ॐ दशावरण-देवताभ्यो नमः' से पुष्पाञ्जलि देकर भूगृह की मध्य रेखा में दक्षिणावर्त से पूजन और तर्पण करे । तर्पण वीरपात्र से करे—

ॐ इन्द्र श्रीपादुकां पूज० ।
ॐ अग्नि श्रीपादु० ।
ॐ यम श्रीपादु० ।
ॐ निऋृत श्रीपादु० ।
ॐ वरुण श्रीपादु० ।
ॐ वायु श्रीपादु० ।
ॐ कुबेर श्रीपादु० ।
ॐ ईशान श्रीपादु० ।
ॐ ब्रह्मा श्रीपादु० ।
ॐ अनन्त श्रीपादु० ।

मूलं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं दशावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि देकर—पूजिताः तर्पिता सन्तु—से तृप्त करे ।

(११) 'ॐ एकादशावरण-देवताभ्यो नमः' से पुष्पाञ्जलि देकर बाहर की तीसरी रेखा में पूजन-तर्पण करे । वीरपात्र से तर्पण करे—

ॐ वज्र श्रीपादुकां पूज० ।
ॐ शक्ति श्रीपादु० ।
ॐ दण्ड श्रीपादु० ।
ॐ खड्ग श्रीपादु० ।
ॐ पाश श्रीपादु० ।
ॐ अंकुश श्रीपादु० ।
ॐ गदा श्रीपादु० ।
ॐ त्रिशूल श्रीपादु० ।

ॐ पद्म श्रीपादु० ।
ॐ चक्र श्रीपादु० ।

मूलं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं एकादशावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि देकर—पूजिताः तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे ।

(१२) 'ॐ द्वादशावरण-देवताभ्यो नमः'—से पुष्पाञ्जलि दे भूपुर के बाहर पूजन-तर्पण करे । तर्पण बलिपात्र से करे—

ॐ वं वटुक श्रीपादुकां पूज० पूर्वे ।
ॐ यां योगिनी श्रीपादु० दक्षिणे ।
ॐ क्षं क्षेत्रपाल श्रीपादु० पश्चिमे ।
ॐ गं गणेश श्रीपादु० उत्तरे ।
ॐ वसु श्रीपादु० आग्नेये ।
ॐ सूर्य श्रीपादु० नैर्ऋत्ये ।
ॐ शिव श्रीपादु० वायव्ये ।
ॐ भूत श्रीपादु० ईशाने ।

मूलं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वादशावरणार्चनम् ॥

पुष्पाञ्जलि दे—पूजिताः तर्पिताः सन्तु—से तृप्त करे ।

इस प्रकार आवरण-पूजन कर चुकने पर साधक इष्टदेवता को पुनः धूप आदि प्रदान करे । यथा—

धूप—धूपपात्र का पूर्ववत् प्रोक्षण कर उस पर अङ्गार रख उस पर धूप डाल देवता को निम्न मन्त्र से अर्पित करे—

ॐ दशाङ्गं गुग्गुलं दिव्यं गवाज्य-सितयान्वितम् ।
कृष्णागरु-युतं देवि धूपोऽयं प्रति-गृह्यताम् ॥

मूलं श्रीकामेश्वर-सहितायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै श्री महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः धूपं घ्रापयामि नमः ।

दीप—दीपपात्र का 'फट्' से प्रोक्षण कर 'नमः' से उस पर फूल चढ़ा उसे जलावे और निम्न मन्त्र से नीराजन करे—

ॐ आनन्दोभूत-कार्पास-वर्ति-राज्य-समन्वितम् ।
सकर्पूरश्च देवेशि दीपोऽयं प्रति-गृह्यताम् ॥

नैवेद्य—देवता के आगे चतुरस्र का मण्डल बनावे । उस पर नैवेद्य पात्र रक्खे । पूर्ववत् शोषणादि संस्कार कर अमृतीकरण करे । मूलमन्त्र और वरुण-बीज 'वं' से आठ-आठ बार अभिमन्त्रित कर बायें हाथ के अँगूठे से पात्र को स्पर्श कर—

ॐ लेह्य-चोष्य-भक्ष्य-नानापक्वान्न-संयुतम् ।
पायसापूप-वटकादध्योदन-पलोदनम् ॥
पर्पटा-वटिकास्तद्वन्नाना-सन्धान-संयुतम् ।
मोदकानेक-जातीया नाना-शाक-समन्वितम् ॥
दुग्धाज्य-सितया युक्तं शुद्धकासार-संयुतम् ।
कट्वम्ल-मधुरादिभिर्नाना-स्वादु-समन्वितम् ॥
समानीतं मया भक्त्या नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।

इस मन्त्र से नैवेद्य समर्पित कर—'ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा'—से देवता के मुख में आचमन प्रदान कर ग्रास-मुद्रा दिखलावे और देवता तथा अपने बीच में यवनिका की कल्पना कर हाथ में फूल लेकर—

ॐ वामेषु स्वर्ण-पात्रीमनुपम-परमान्नेन पूर्णां दधाना—
वत्येन स्वर्ण-दर्वीं निज-जन-हृदयाभीष्टदां धारयन्ती ।
सिन्दूरारक्त-वस्त्रा विविध-मणि-लसद्-भूषणामेचकाङ्गी ।
तिष्ठन्ती प्राग्रतस्ते मधु-मद-मुदिता अन्नपूर्णा सदैव ।

पंक्त्योपविष्टान् परितस्तु चक्र-
शक्त्या स्त्रियालिङ्गित-वामभागान्।
सर्वोपचारैः परिपूज्य भक्त्या
तवाम्बिके पारिषदान्नमामि ॥

इस मन्त्र से देवता को पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। फिर तत्व-मुद्रा से विशेषार्घ्य के द्रव्य से देवता को तर्पण करावे—

ॐ ऐं आत्म-तत्व-व्यापिका श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरि तृप्यतु।
ॐ क्लीं विद्या „ „ „
ॐ सौः शिव „ „ „
मूलं सर्व „ „ „

होम❁

साधक अब होम की क्रिया करे। वह अपने दाहने एक हाथ लम्बी-चौड़ी तथा एक अंगुल ऊँची बालुका की वेदी बनावे। उसे मूल-मन्त्र पढ़कर देखे। 'फट्' से सामान्यार्घ्य के जल से उसका प्रोक्षण कर 'फट्' से ही कुश के अग्र भाग से उसका ताड़न करे। 'हुं' से मूठी से जल द्वारा उसको सींचे। फिर अग्नि लावे। उसका एक अङ्गार—'मूलं हूं फट् क्रव्यादेभ्यः'—यह मन्त्र पढ़कर नैऋत्य कोण में क्रव्याद का अंश समझ कर गिरा दे और तब उस आग को मूलमन्त्र से वेदी पर रखे और समिधा रखकर अग्नि जला कर यह मन्त्र पढ़े—

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्ण-वर्णमनलं ममीद्धः सर्वतोमुखम् ॥

इसके बाद हाथ में जल लेकर सङ्कल्प पढ़े। सङ्कल्प के अन्त में—'श्री मत्त्रिपुरसुन्दरी-पूजाङ्गं नित्य-होमं करिष्ये'—

❁ प्रायः साधक हवन नहीं करते।

यह पढ़ हाथ का जल छोड़े। अब मूलमन्त्र से प्राणायाम कर इष्ट-देवता का विनियोग पढ़ ऋष्यादि न्यास करे और इष्टदेवता का ध्यान करे। फिर मूलमन्त्र से अग्नि के ऊपर जल छिड़के। तब उसका पञ्चोपचार से पूजन करे। इसके बाद पीठस्थ अपने इष्टदेवता का अग्निरूप में ध्यान करे और उसका पञ्चोपचार से पूजन करे। फिर घृत या पायस की आहुतियाँ निम्न मन्त्रों से प्रदान करे—

ॐ स्यूं हिरण्यायै स्वाहा। ॐ ष्यूं गगनायै स्वाहा। ॐ श्यूं रक्तायै स्वाहा। ॐ व्यूं कृष्णायै स्वाहा। ॐ ल्यूं सुप्रभायै स्वाहा। ॐ र्यूं बहुरूपायै स्वाहा। ॐ य्यूं अति-रक्तायै स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

इस प्रकार आहुतियाँ देकर—'मूलं श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा श्री मत्त्रिपुरसुन्दर्या इदं' —मन्त्र तीन बार पढ़कर तीन आहुतियाँ दे। इसके बाद—'ॐ गुरवे स्वाहा, ॐ परमगुरवे स्वाहा, ॐ परापरगुरवे स्वाहा, ॐ परमेष्ठिगुरवे स्वाहा'—इन चार मन्त्रों से चारों गुरुओं से लिए और—'ॐ रत्यै स्वाहा, ॐ प्रत्यै स्वाहा, ॐ मनोभवायै स्वाहा'—इन तीन मन्त्रों से तीनों शक्तियों को आहुतियाँ प्रदान करे। फिर इष्टदेवता के षडङ्गों के लिये इस प्रकार आहुतियाँ दे—

ॐ ऐं क-५ हृदयशक्त्यै स्वाहा। ॐ क्लीं ह-६ शिरःशक्त्यै स्वाहा। ॐ सौः स-४ शिखाशक्त्यै स्वाहा। ॐ ऐं क ५ कवचशक्त्यै स्वाहा। ॐ क्लीं ह-६ नेत्रशक्त्यै स्वाहा। ॐ सौः स-४ अस्त्रशक्त्यै स्वाहा।

इसके बाद कामदेवों को आहुतियाँ प्रदान करे। यथा—ॐ मनोभवाय स्वाहा, ॐ मकरध्वजाय स्वाहा, ॐ कन्दर्पाय स्वाहा, ॐ मन्मथाय स्वाहा, ॐ कामदेवाय स्वाहा।

फिर कामदेवों की शक्तियों को आहुतियाँ प्रदान करे। यथा—ॐ द्राविण्यै स्वाहा, ॐ क्षोभिण्यै स्वाहा, ॐ आकर्षिण्यै स्वाहा, ॐ वशीकरिण्यै स्वाहा, ॐ सम्मोहिन्यै स्वाहा।

आठ शक्तियों को—ॐ सुभगायै स्वाहा, ॐ भगायै, ॐ भगसर्पिण्यै, ॐ भगमालायै, ॐ अनङ्गायै, ॐ अनङ्गकुसुमायै, ॐ अनङ्गमेखलायै, ॐ अनङ्गमदनायै।

अष्टमातृकाओं को—ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा, ॐ माहेश्वर्यै, ॐ कौमार्यै, ॐ वैष्णव्यै, ॐ वाराह्यै, ॐ इन्द्राण्यै, ॐ चामुण्डायै, ॐ महालक्ष्म्यै।

आठ भैरवों को—ॐ असिताङ्ग भैरवाय स्वाहा, ॐ रुरुभैरवाय, ॐ चण्डभैरवाय, ॐ क्रोधभैरवाय, ॐ उन्मत्तभैरवाय ॐ कपालिभैरवाय, ॐ भीषणभैरवाय, ॐ संहारभैरवाय।

आठ पीठों को—ॐ कामरूपपीठाय स्वाहा, ॐ मलयपीठाय, ॐ कुलनागपीठाय, ॐ कुलान्तपीठाय, ॐ चौहारपीठाय, ॐ जालन्धरपीठाय ॐ उड्डीयानपीठाय, ॐ जालन्धरपीठाय, ॐ देवीकोटपीठाय।

दस भैरवों को—ॐ हेतुकाय स्वाहा, ॐ त्रिपुरान्तकाय, ॐ वेतालाय, ॐ अग्निजिह्वाय, ॐ कालान्तकाय, ॐ कपालाय, ॐ एकपादाय, ॐ भीमरूपाय, ॐ मलयाय, ॐ हाटकेश्वराय।

दस दिक्पालों को—ॐ इन्द्राय ॐ स्वाहा, ॐ अग्नये, ॐ यमाय, ॐ निऋतये, ॐ वरुणाय, ॐ वायवे, ॐ कुबेराय, ॐ ईशानाय, ब्रह्मणे, ॐ अनन्ताय।

दिक्पालों के आयुधों को—ॐ वज्राय स्वाहा, ॐ शक्त्यै, ॐ दण्डाय, ॐ खड्गाय, ॐ पाशाय, ॐ अंकुशाय, ॐ गदायै, ॐ त्रिशूलाय, ॐ पद्माय, ॐ चक्राय।

बलिदेवताओं को—ॐ बटुकाय स्वाहा, ॐ योगिन्यै, ॐ क्षेत्रपालाय, ॐ गणेशाय, ॐ वसवे, ॐ सूर्याय, ॐ शिवाय, ॐ भूताय।

मूलमन्त्र के अन्त में 'स्वाहा' लगाकर २५ आहुतियाँ प्रदान कर चार व्याहृतियों की आहुतियाँ दे—ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुव स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। फिर २५ बार मूलमन्त्र का जप करे। उसका फल देवता को अर्पित कर देवता के चक्र में पुनः आ विराजने की भावना करे। इसके बाद निम्न मन्त्र से भस्म का वन्दन करे—

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने कश्यपस्य त्र्यायुषं।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषं॥

फिर यह मन्त्र पढ़कर अग्नि का विसर्जन करे—

ॐ भो भो वह्ने महाशक्ते सर्व-काम-प्रसाधक।
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम्॥

पञ्चबलि

१ बटुकनाथ—इष्टदेवता के पीठ के ईशानकोण में भूमि पर 'ॐ ऐं ह्रीं ह्रूं व्यापकमण्डलाय नमः'—इस मन्त्र से त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र मण्डल की रचना कर—'ॐ बटुकाय बलिमण्डलाय नमः' से उसका पूजन करे। फिर—बटुकनाथ इहागच्छ इह सन्निधेहि इह सन्निरुद्धस्व इह सम्मुखी भव—यह पढ़ पाँच मुद्राओं को दिखाता हुआ बटुकनाथ का आवाहन करे। इसके बाद 'वां वीं वूं वैं वौं वः' की योजना कर षडङ्ग मन्त्रों से सकलीकरण करे। फिर आधार पर बलियुक्त बलिपात्र रखकर—ॐ बटुकनाथ बलिद्रव्याय नमः—से उसका पूजन कर उसे बायें हाथ के अंगूठे और अनामिका से पकड़ तथा

दाहने हाथ से बलिपात्र का अमृत लाकर---ॐ ॐ ॐ एह्येहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिल-जटाभार-भास्वर पिङ्गल त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान् नाशय नाशय इम पूजनं सर्वोपचार-सहित बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। एष बलिर्वं वटुकाय नमः—से वाम तत्वमुद्रा से बलि देकर निम्न मन्त्र से पुष्पाञ्जलि दे—

ॐ बलिदानेन सन्तुष्टो वटुकः सर्व-सिद्धिदः।
रक्षां करोतु मे नित्यं भूत-वेताल-सेवितः॥

२ योगिनी—पीठ के आग्नेय कोण में—ॐ ऐं ह्रीं हूं व्यापकमण्डलाय नमः—से त्रिकोण-वृत्त चतुरस्र का मण्डल बनाकर 'यां योगिनी-बलिमण्डलाय नमः'—से उसका पूजन करे। 'योगिनीगणा इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु इह सन्निधाप्ता भवन्तु इह सन्निरुद्धाप्ता भवन्तु इह सम्मुखी भवन्तु—यह पढ़ आवाहनी आदि पाँच मुद्राओं को दिखाता हुआ योगिनी-गण का आह्वान करे। 'यां यीं यूं यैं यौं यः' की यथा-क्रम योजना करके षडङ्ग मन्त्रों से सकलीकरण करे। फिर आधार पर बलि-युक्त बलिपात्र रखकर 'ॐ योगिनी-बलिद्रव्याय नमः' -से उसका पूजन करे। फिर बायें हाथ की गजमुण्ड मुद्रा से बलिपात्र को पकड़ और दाहने हाथ से बलिपात्र का अमृत ला---

ॐ ॐ ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा। पाताले वाऽनले वा सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिते वा। क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन। प्रीताः देव्या सदा नः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्याः॥ ॐ यां योगिनीभ्यो हुँ फट् सर्ववर्णयोगिनीभ्यो हुँ फट् स्वाहा---से दाहनी तत्त्वमुद्रा से बलि देकर नाराचमुद्रा से पुष्पाञ्जलि दे—

ॐ या काचिद् योगिनी रौद्री सौम्या घोरतरा परा।
भूचरी खेचरी व्योमचरी प्रीतास्तु मे सदा॥

३ क्षेत्रपाल--पीठ के नैऋत्य कोण में त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल---ॐ ऐं ह्रीं हूं व्यापकमण्डलाय नमः--से बना कर 'क्षं क्षेत्रपाल बलिमण्डलाय नमः'---से उसका पूजन करे। 'क्षेत्रपाल इहागच्छ इह तिष्ठ इह सन्निधेहि इह संनिरुद्धस्व इह सम्मुखी भव'—यह पढ़ पाँच मुद्राओं को दिखाता हुआ क्षेत्र-पाल का आवाहन करे। 'क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः'—की योजना कर यथाक्रम षडङ्ग मन्त्रों से सकलीकरण करे। आधार पर बलियुक्त बलिपात्र स्थापित कर 'ॐ क्षेत्रपाल बलिद्रव्याय नमः'--से उसका पूजन करे। बायें हाथ की तर्जनी और अँगूठे से बलिपात्र को पकड़ और दाहने हाथ से बलिपात्र का अमृत ला—ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्थानक्षेत्रपाल इहागच्छ इमं धूप-दीपादिसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण आपय आपय सिद्धिं मे प्रयच्छ प्रयच्छ स्वाहा। एष बलिः क्षेत्रपालाय नमः—यह पढ़ बायें हाथ की मूठ की तर्जनी से बलिप्रदान कर पुष्पाञ्जलि दे—

ॐ यस्मिन् क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालस्य किङ्करः।
प्रीतोऽयं बलिदानेन शान्तिं रक्षां करोतु मे॥

४ गणेश—पीठ के वायव्य कोण में--ॐ ऐं ह्रीं हूं व्यापक-मण्डलाय नमः---से त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल बनाकर 'गं गणपतिबलिमण्डलाय नमः'---से उसका पूजन करे। 'गण-पति इहागच्छ इह तिष्ठ इह सन्निधेहि इह संनिरुद्धस्व इह सम्मुखी भव'---यह पढ़ आवाहिनी आदि पाँच मुद्राओं को दिखाता हुआ गणेश का आवाहन करे। 'गां गीं गूं गैं गौं गः' को यथाक्रम षडङ्ग मन्त्रों में युक्त कर सकलीकरण करे। आधार पर बलिद्रव्ययुक्त बलिपात्र रक्खे। बायें हाथ की मध्यमा और अंगुष्ठ से बलिपात्र को पकड़ और दाहने हाथ से बलिपात्र का अमृत ला—

ॐ गां गीं गूं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। एष बलिर्गं गणपतये नमः—यह पढ़ बायें हाथ की मिली हुई खड़ी, पर कुछ झुकी अंगुलियों के बीच अँगूठा रख बलिप्रदान करे। फिर नाराच मुद्रा से पुष्पाञ्जलि दे—

ॐ सर्वदा सर्वकार्याणि निर्विघ्नानि सुसाधय।
सन्निधिं कुरु मे नित्यं गणराज सशक्तिकः॥

५ सर्वभूत—पीठ की उत्तर दिशा में—ॐ ऐं ह्रीं ह्रं व्यापकमण्डलाय नमः—से त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र का मण्डल बनाकर 'ॐ सर्वभूत-बलि-मण्डलाय नमः'—से उसका पूजन करे। 'सर्वभूतगणा इहागच्छन्तु इह तिष्ठन्तु इह सन्निधाप्ता भवन्तु इह सन्निरुद्धाप्ता भवन्तु इह सम्मुखी भवन्तु'—यह पढ़ आवाहिनी आदि पाँच मुद्राओं को दिखाता हुआ सर्वभूतों का आवाहन करे। 'ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः' की यथाक्रम षडङ्ग के मन्त्रों में योजना कर सकलीकरण करे। आधार पर बलि-द्रव्ययुक्त बलिपात्र स्थापित कर 'ॐ सर्वभूतबलिद्रव्याय नमः'—से उसका पूजन करे। बायें हाथ की अंगुलियों से बलिपात्र पकड़ और दाहने हाथ से बलिपात्र का अमृत ला—ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यो हुँ फट् स्वाहा। एष बलिः सर्व-भूतेभ्यो नमः—से बलि देकर नाराच मुद्रा से पुष्पाञ्जलि दे—

ऐं भूता ये विविधाकारा दिव्य-भूम्यन्तरिक्षगाः।
पातालातल-संस्थाश्च शिव-योगेन भाषिताः॥
क्रूराद्याः सप्तसन्धाश्च इन्द्राद्येषु व्यवस्थिताः।
ध्रुवाद्याः सर्व-गन्धर्वा ऐन्द्राद्याः सर्व-देवताः॥
ते सर्वे प्रीति-मनसो भूत्वा गृह्णन्त्विमं बलिम्।

अब 'सर्वाभ्यो बलिदेवताभ्यो नमः'—से सब मण्डलों का पञ्चोपचार-पूजन कर तीन बार फट्कार कर निम्न मन्त्र से फूल देकर बलि-देवताओं का विसर्जन करे—

बलिदानेन सन्तुष्टा क्षमध्वं बलिदेवताः।
यथासुखं विहरन्तु यथेच्छा सुदिशासु च॥

इसके बाद साधक स्वस्तिक आसन से बैठकर सामान्यार्घ्य का जल एक दूसरे पात्र में लेकर 'वं' बीज पढ़कर धेनुमुद्रा दिखाकर अमृतमय करे। फिर—

ॐ सलिलं पावनं देवि शीतलं सुमनोहरम्।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥

मूलं साङ्गाय सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै जलं निवेदयामि नमः—से जल देकर देवता का ध्यान करे। फिर—मूलं श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरि मातः तृप्तासि? से प्रश्न पूछे।

ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा—यह मन्त्र पढ़कर सामान्यार्घ्य जल से आचमन करावे और यह भावना करे कि नैवेद्य गत-रस हो गया है। तब उसे उठाकर नैर्ऋत्य कोण में रख दे और 'फट्' मन्त्र से उस स्थान का शोधन करे। फिर हाथ धोने के लिये जल देकर गन्ध द्रव्य उद्वर्तन के लिए देवे। इसके बाद मूलमन्त्र से आचमन करावे।

तब सामान्यार्घ्य के जल से ताम्बूल का प्रोक्षण कर उसके शोषणादि संस्कार कर धेनुमुद्रा से उसका अमृतीकरण करे और—

ॐ एला-लवङ्ग-कर्पूर-मुक्ताचूर्ण-समन्वितम्।
केतकी-वासितैः शुद्धैः खादिरैर्मृग-नाभि युक्॥

नाग-वल्लीदलैर्युक्तं शुद्ध-पूगी-फलैर्युतम् ।
हेम-पात्र-समायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

मूलं साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै मत्रिपुरसुन्दर्यै ताम्बूलं समर्पयामि—यह पढ़ और उसे बायें हाथ की पाँचों अँगुलियों से स्पर्श कर सामान्यार्घ्यं का जल छोड़ कर ताम्बूल-मुद्रा दिखावे । इसके बाद पशुबलि करे ।

पशुबलि

सुन्दर रङ्गवाला एक युवा छाग, तेज धारवाला खड्ग, छाग-बन्धन के लिए नई रस्सी, स्तम्भ, रुधिर ग्रहण करने के लिए ताम्रपात्र, पका केला, पकड़नेवाले दो आदमी, छेदन करनेवाला एक आदमी—यह सब पशुबलि में चाहिए।

सुन्दर लक्षण से युक्त पशु को मूलमन्त्र से स्नान करा कर देवी के सामने अपने वामभाग में पूर्व-दिशा की ओर पशु का मुख कर उसके दोनों सींगों में सिन्दूर लगावे और गले में बेल-पत्र की माला पहनावे । इसके बाद सामान्यार्घ्यपात्र के जल से मूलमन्त्र से तीन बार प्रोक्षण और कवच मन्त्र 'हुं' से अवगुण्ठन और धेनुमुद्रा का प्रदर्शन कर 'एतत् पाद्यं छागपशवे नमः' से पाद्यादि के द्वारा पशुपूजा करे । फिर पशु के कान में यह मन्त्र पढ़े—'ॐ पशुपाशाय विद्महे विश्वकर्मणे धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात् ।'

इसके बाद शुद्ध जल से खड्ग को धोकर सिन्दूर से उस पर वृत्ताकार तीन चिह्न करे और उन चिह्नों में विल्वपत्र के डंठल से 'ह्रीं' मन्त्र लिखकर 'ॐ ह्रीं कालि कालि वज्रेश्वरि लौहदण्डाय नमः' से गन्ध-पुष्प-द्वारा खड्ग की पूजा करे। फिर खड्ग के अग्र, मध्य, मूल भाग में गन्ध-पुष्प के द्वारा 'हुं वागीश्वरीब्रह्माभ्यां नमः, हुं लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः, हुं उमामहेश्वराभ्यां नमः' से पूजा करे । फिर 'एते गन्धपुष्पे ॐ ब्रह्माविष्णुशिवशक्तियुक्ताय खड्गाय नमः' से पूजन कर उसे प्रणाम करे—ॐ खड्गाय खड्गधाराय शक्तिकार्यार्थतत्पर पशुं छिन्द्यतां शीघ्रं खड्गनाथ नमोऽस्तु ते ।

इसके बाद तिल, कुश, जल हाथ में लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्येत्यादि श्रीत्रिपुरा-देव्याः प्रीतिकामः इमं छागपशुं श्रीत्रिपुरा-देवतायै अहम् सम्प्रददे ।' फिर हाथ जोड़ कर 'ॐ बलिं गृह्ण महादेवि, पशुं सर्वगुणान्वितम् । यथोक्तेन विधानेन तुभ्यमस्तु समर्पितम्' यह मन्त्र पढ़े । 'आं हूं फट्' से पशु के कन्धे पर धीरे से खड्ग छुआवे । फिर पशु को स्तम्भ में बाँधे और अर्घ्योदक से प्रोक्षण कर गन्ध-पुष्प से स्तम्भ की पूजा करे । तब पशु का छेदन करे । पशु का सिर और पशु का रक्त थोड़े मांस के साथ ताम्रपात्र के अन्दर रख कर देवी के सामने ले जावे और पशु का सिर उत्तर-मुख करके विल्वपत्र के ऊपर रख दे । उस सिर के ऊपर घी की बत्ती जलावे । फिर इस मन्त्र से सिर को निवेदन करे—

एष सप्रदीप छागशीर्षबलिः श्रीदुर्गादेव्यै नमः ।
एष समांसरुधिरबलिः श्रीदुर्गादेव्यै नमः ॥

फिर उस रक्त के चार भाग करे—हर एक भाग का गन्ध-पुष्प के द्वारा 'एष समांसरुधिरबलिः हुं वं वटुकाय नमः ।' इत्यादि क्रम से 'हुं यं योगिनीभ्यो नमः, हुं क्षं क्षेत्रपालाय नमः' हुं गं गणेशाय नमः । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कौशिकी रुधिरेणाप्यायताम्' से पूजन करे । इस विधि से पशु बलि कर नीराजन करे ।

नीराजन

एक थाली में स्वस्तिकादि कोई एक मण्डल बनावे। उस पर आटे के बने पाँच दीप जलावे। फिर—

ग्लूं गगनलोक गोमेदकरत्नाय ग्लूं नमः।
स्लूं स्वर्गलोक सुवर्णरत्नाय स्लूं नम ॥
म्लूं मर्त्यलोक माणिक्यरत्नाय म्लूं नमः।
प्लूं पाताललोक पद्मरागरत्नाय प्लूं नमः॥
न्लूं नागलोक नीलरत्नाय न्लूं नमः।

इन मन्त्रों से पूर्वादि दिशाओं में और मध्य में उन रत्नों का गन्धाक्षत-पुष्प से पूजन करे और चक्रमुद्रा दिखावे। फिर नीराजन-स्तुति ❀ का पाठ करते हुए श्री जगदम्बा की आरती करे। अन्त में एक पात्र में सामान्यार्घ्य का जल लेकर—

ॐ समस्त-चक्र-चक्रेशि-युते देवि नवात्मिके।
आरार्तिकमिदं तुभ्यं गृहाण परमेश्वरि ॥

यह मन्त्र पढ़ कर जल छोड़ कर समर्पण करे। फिर अपने भीतर के और बाहर के तेज के एकीभूत होने की भावना करे। तब वह दीपक-पात्र (थाली) उठाकर गाँठों के बल खड़े हो घटाभेरी के बजने के साथ मूलमन्त्र पढ़ता हुआ देवी के पैर से सिर तक सात बार नीराजन करे। पैरों का, हृदय का और मुख का तीन-तीन बार नीराजन करे। इसके बाद मूलमन्त्र से देवता को पुष्पाञ्जलि देकर मूलमन्त्र का जप✤ करे।

❀ नीराजन-स्तुतियाँ 'चक्रपूजा के स्तोत्र' और 'आरति-माला' नामक पुस्तकों में दी हैं।

✤ कुछ साधक सूतक में भी मन्त्र का जप बन्द नहीं करते। वे प्रणव-पुटित इष्टमन्त्र का दश बार जप कर सूतक का परिहार कर लेते हैं।

इसके लिए बाएँ हाथ में माला लेकर उसका पूजन करे। फिर उसे दाएँ हाथ में लेकर यथाशक्ति जप करे। मूलमन्त्र का १०८ या ११०८ बार जप करे। जप कर चुकने पर माला को शिर पर धारण कर फिर इष्टमन्त्र के ऋष्यादि और षडङ्गादि न्यास करे। फिर प्राणायाम करके मानसिक पञ्चोपचारों✽ से देवता का पूजन करे। इसके बाद सामान्यार्घ्य के जल से जप-फल देवता के दाहने हाथ में समर्पित करे। यथा—

ॐ गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

अब गन्ध-पुष्प से माला का पूजन कर उसकी स्तुति करे—

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रसीद वरदायिनि।
शुभं कुरुष्व मे देवि यशः कीर्तिश्च देहि मे ॥

इस प्रकार स्तुति कर माला को छिपाकर रख दे। इसके बाद कवच, सहस्रनाम और स्तोत्र का पाठ करे।

पुष्पांजलि

तब साधक पुष्पांजलि लेकर सामयिकों के साथ किङ्किणी स्तोत्र + पढ़ता हुआ चक्रेश्वरी को पुष्पांजलियाँ प्रदान करे।

मण्डल पूजन

सामयिक✤ चक्रेश्वरी का समुद्रा प्रणाम कर क्रम से आसनों पर बैठें। गुरुदेव या उनके तुल्य कोई महानुभाव हों तो चक्रे-

✽ मानसिक पञ्चोपचार पूजा पृष्ठ ६४ पर दी है।

+ किङ्किणी स्तोत्र 'चक्रपूजा के स्तोत्र' नामक पुस्तक में संगृहीत है।

✤ अर्चन स्थान में हाथ-पैर धो पूर्ण शुद्ध हो प्रवेश करे।

श्वर पहले उन्हें पात्र देकर सादर प्रणाम करे। यदि न हों तो उनका ध्यान कर उनके पात्र के द्रव्य को स्वयं पान कर जाय।

इसके बाद शक्ति का पूजन करे। यथा—शक्ति को आसन पर बिठा उसे देवी-रूप समक्ष गन्ध, पुष्प, वस्त्र, आभूषण आदि से लक्ष्मीबीज या मूलमन्त्र से उसका सर्वोपचारों से पूजन करे। फिर शक्तिपात्र का अमृत दूसरे पात्र में लेकर—

ॐ अलिपात्रमिदं तुभ्यं दीयते पिशितान्वितम्।
स्वीकृत्य सुभगे देवि! जयं देहि रिपून् दह॥

यह पढ़ शुद्धि खण्ड के सहित वह पात्र उसे दे दे। शक्ति स्वकल्पानुसार उसका अमृत पान करे। यथा रुचि पात्र लेकर—

वत्स! तुभ्यं प्रदास्यामि पीतशेषं कुलामृतम्।
तव शत्रून हनिष्यामि सर्वाभीष्टं ददामि ते॥

यह पढ़ अन्तिम पात्र का अवशेष वह अपने उच्छिष्टपात्र में चक्रेश्वर को दे दे। वह उसे लेकर विशेष स्थान में रख दे। फिर चक्रेश्वर शक्ति को चर्वण आदि प्रदान कर यह पढ़े—

ॐ व्योमचक्रे समारूढे भुवनान्तर-चारिणि।
चर्वणं कुरु देवेशि प्रसीद परमेश्वरि॥

शक्ति के चर्वण ग्रहण कर चुकने पर उसे दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करे। तदनन्तर देवीरूप समक्ष कुमारी का पूजन करे—

ॐ मन्त्राक्षर-मयीं लक्ष्मीं मातृणां रूप-धारिणीम्।
नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम्॥

यह मन्त्र पढ़ गन्ध-पुष्पादि से शक्ति की ही भाँति कुमारी का पूजन कर उसे पात्र एवं चर्वण आदि प्रदान करे। फिर देवी-पुत्र समक्ष पाँच वर्ष के बालक का गणेशरूप में और आठ वर्ष के बालक का वटुक-रूप में पूजन करे। वीरपात्रामृत से उन्हें तृप्त कर चर्वण आदि भी प्रदान करे।

शक्ति आदि का विसर्जन कर चक्रेश्वर निम्न मन्त्र से सामयिकों का गन्ध-पुष्प से पूजन करे और माला पहनावे—

कौलाचार-समारूढां देवी-भक्ति-परायणां।
भैरव-रूप सम्पन्नां वन्दे श्रीवीरमण्डलीं॥

इसके बाद पात्रों को वीरपात्र के अमृत से पूर्ण कर गन्ध-पुष्प से उन पात्रों का पूजन कर ज्येष्ठ के क्रमानुसार शुद्धि-खण्ड-सहित उन पात्रों को प्रदान करे। सामयिक खड़े होकर नमस्कारपूर्वक यथाविधि पात्र ग्रहण कर अपने आसन पर बैठ और पात्र को आधार पर स्थापित कर उसका अक्षत-पुष्प से पूजन करें। फिर चक्रेश्वर की अनुमति से पहले तत्त्वशुद्धि कर गुरुओं तथा इष्टदेवता का तर्पण करें। तब चक्रेश्वर के साथ पात्रवन्दनपूर्वक सभी यथा नियम तर्पण चर्वण करें। तर्पण-चर्वण हो चुकने पर पूजा का विसर्जन करे।

विसर्जन

चक्रेश्वर सामान्यार्घ्य का जल हाथ में लेकर---ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्कृतं यत्स्मृतं यदुक्तं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा ॐ तत्सत्---यह पढ़ ध्यान-पूर्वक देवता के दाहने हाथ में समर्पित करे। फिर सामान्यार्घ्यपात्र को ऊपर उठाकर यन्त्रस्थ देवता के सिर पर उसके जल की धार छोड़े और यह पढ़े---

ॐ साधु वासाधु वा कर्म यद् यदाचरितं मया।
तत्सर्वं कृपया देवि ग्रहाण मदनुग्रहात॥

अर्घ्य के शेष जल को मूलमन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करे। फिर उस जल से अपना और सामयिकों का अभि-

सिंचन करे और सामान्यार्घ्यपात्र को उलट कर रख दे। इसके बाद हाथ में फूल लेकर देवता को पुष्पाञ्जलि प्रदान करे और—

मूलं रश्मिरूपा महादेव्योऽप्यत्र पूजित-देवताः।
श्रीत्रिपुरा-ऽङ्गलीनास्ताः सन्तु सर्वा शुभावहाः॥

यह पढ़ आवरण देवताओं को देवता के अंग में विलीन होते ध्यान करे। फिर 'श्रीत्रिपुरे मातः क्षमस्व'----यह कह योनिमुद्रा से देवता को प्रणाम करे और तीन बार अस्त्रमन्त्र से फट्कार कर संहारमुद्रा से यन्त्रस्थ एक पुष्प उठाकर---

ॐ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः न विदुः परमं पदम्॥

यह पढ़ पुष्प को सूँघ नासा मार्ग से देवता के हृदय-कमल पर जा विराजने की भावना कर देवता का विसजन करे।

ॐ देवनाथ गुरो स्वामिन् लोकानुग्रहकारक।
त्रायस्व मां कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु॥

यह पढ़ गुरुदेव को प्रणाम कर श्रीपात्र को सिर तक ऊपर उठा तत्वमुद्रा से उसके अमृत से सिर में गुरुपादुका मन्त्र से गुरु का तर्पण करे। फिर कुछ अमृत दूसरे पात्र में लेकर---

ॐ प्रकाशाकाश-हस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनी स्रुचं।
सुषुम्ना-वर्त्मना नित्यमक्षवृत्तिर्जुहोम्यहम् स्वाहा॥

यह पढ़ पान करे। पुनः उस पात्र में कुछ अमृत लेकर---

ॐ यदन्न-पात्र-सम्भूतमहन्ता परमामृतम्।
पराहन्तामये वह्नौ जुहोमि शिवरूपतः स्वाहा॥

यह पढ़ उसी प्रकार अमृत का पान करे। अब श्रीपात्र का शेष सब अमृत उसी पात्र में लेकर--

ॐ अन्तर्निरन्तर निरिन्धन मेधमाने।
मायान्धकार-परिपन्थिनि संविदग्नौ॥
कस्यांश्चिदद्भुत-मरीचि-विकाशि-भूमौ।
विश्वं जुहोमि वसुधा दिशिवावसानम्॥ स्वाहा--

यह पढ़कर पूर्ववत् पान कर जाय। फिर उस पात्र को उलट कर भूमि पर रख दे और उस पर जल छोड़ तथा फूल चढ़ा उसे उठाकर छिपाकर रख दे। जहाँ उसे उलट कर रक्खा था, उस स्थान पर 'ह्रीं' लिखकर वहाँ की मिट्टी सेमूलमन्त्र पढ़ अपने माथे में तिलक लगावे।

इस प्रकार श्रीपात्र का विसर्जन कर गुरुपात्र का अमृत गुरुदेव को या उनकी अनुपस्थिति में उनके तुल्य अन्य सामयिक को प्रदान करे। फिर शक्तिपात्र का अमृत शक्तियों को, वारपात्र का वीरों को, योगिनीपात्र का कुमारिकाओं को और आत्मपात्र का पुत्र या शिष्य को प्रदान करे।

इन पात्रों के इस प्रकार विसर्जन किये जाने के बाद सामयिक अपने अपने पात्र का श्रीपात्र की भाँति विसर्जन करें।

अब वटुकादि बलियों का निर्माल्य एक पात्र में ले पूजागृह के बाहर जा उत्तर दिशा में त्रिकोण-वृत-चतुरस्र मण्डल बना कर—ऐं ह्रीं श्रीं व्यापकमण्डलाय नमः—से उसका पूजन करे। उसमें निर्माल्य-पात्र रख उच्छिष्ट भैरव का ध्यान करे—

गदात्रिशूलडमरुपात्रहस्तं त्रिलोचनम्।
कृष्णाभं भैरवं ध्यायेत् सर्वविघ्न-निवारणम्॥

फिर गन्धपुष्प से निर्माल्य का पूजन कर ॐ ॐ ॐ ॐ एह्येहि उच्छिष्टभैरव इदं धूपदीपादिसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण आपय आपय सिद्धिं मे प्रयच्छ स्वाहा। एष बलिः उच्छिष्ट-भैरवाय नमः—से बलिपात्र के सर्वामृत से बलि प्रदान करे।

इस प्रकार बलिपात्र का विसर्जन कर पात्र को और हाथ-पैरों को धोकर आचमन कर उस पात्र में जल ले 'उदयोऽस्तु'—कह पुनः आसन पर आ बैठे। उस पात्र के जल में श्रीपात्र के अमृत का एक विन्दु छोड़ अपने और सामयिकों पर उसका जल छिड़के और शान्तिस्तोत्र का पाठ कर वीरवन्दना पढ़े। शान्तिस्तोत्रके पाठ के बाद चक्रेश्वर विशेषार्घ्य का सारा अमृत एक दूसरे पात्र में लेकर स्वाहान्त मूलमन्त्र पढ़ उसे पान कर जाय। फिर ताम्रपात्र में रक्तचन्दन-अक्षत-पुष्प-जल लेकर उसे मस्तक तक उठाकर —ॐ ह्रां ह्रीं हंसः सूर्य एष ते अर्घ्यः स्वाहा—से सूर्य को अर्घ्य प्रदान कर हाथ जोड़ यह पढ़े—

ॐ यज्ञच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं पूजने मम।
तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु भास्करस्य प्रसादतः॥

तब प्राणायाम और कराङ्ग-न्यास कर गुरुस्तव का पाठ करे। तदनन्तर—ॐ क्लीं नमः—से यन्त्र पर से एक फूल उठाकर सूंघे और यन्त्र पर लगे गन्ध को लेकर यह पढ़े—

ॐ यं यं स्पृशामि पादेन यं यं पश्यामि चक्षुषा।
स एव दासतां यातु यदि शक्र-समो भवेत्॥

उस गन्ध का अपने तिलक लगावे। फिर चरणोदक लेकर—

ॐ गङ्गा-पुष्कर-नर्मदा तु यमुना-गोदावरी गोमती।
गङ्गा-द्वार-प्रयागराज-बदरी वाराणसी-सिन्धुषु॥
रेवा-सेतु-सरस्वतीप्रभृतयः ब्रह्माण्ड भाण्डोदरे।
तीर्थ-स्नान-सहस्रकोटिफलदं श्रीचक्र-पादोदकम्॥

यह पढ़े और उसे पान करे। फिर देवता का नैवेद्य सामयिकों को बाँट कर स्वयं ग्रहण करे और अपने को कामकला के रूप में ध्यान कर सुखपूर्वक विहार करे।

द०—परा वाणी प्रेस, अलोपीबाग मार्ग, प्रयाग-६

'श्री दुर्गा सप्तशती' से संबधित पुस्तकें

सप्तशती रहस्य ३-५०, सप्तशती मीमांसा २-५०, दुर्गा सप्तशती (शब्दशः पद्यानुवाद) १-५०, चण्डी चरितावली ०-७५, शतचण्डी विधान ३-७५, चण्डिका माहात्म्य १)।

ललित पद्यों में साधकों को उद्बोधक साहित्य

उपदेश मुक्तावली (भजन-संग्रह) ६-५०, दोहावली)५०, आरतिमाला)७५, श्रीभैरवोपदेश २-७५, विनय सुधा १-२५, कौल-कीर्तन १-२५, श्रीउन्द्धव गीतांजलि २-५०।

पूजा-पद्धतियों की सहायता से ही व्यक्ति साधना कर सकता है, तत्सम्बन्धी उपयोगी पुस्तकें—

श्रीकाली नित्यार्चन ४), श्रीश्यामा पूजापद्धति ३), श्रीतारा नित्यार्चन ३), श्री श्री विद्या नित्यार्चन ५·५०, श्रीबाला नित्यार्चन ४), श्री ललिता नित्यार्चन ४), श्री षोडशी नित्यार्चन ४), श्री भुवनेश्वरी नित्यार्चन ४), वैदिक श्री वगला पूजा पद्धति ०), श्री वगला नित्यार्चन २), श्री छिन्नमस्ता नित्यार्चन २), श्री कमला नित्यार्चन ३), श्री दुर्गा नित्यार्चन ३)।

स्तोत्र-साहित्य साधना का एक विशेष अङ्ग है, उसकी पूर्ति करानेवाली पुस्तकें

श्रीबाला स्तव मंजरी २-५०, श्रीविद्या स्तव मंजरी ४-५०, श्रीकाली स्तव मंजरी ३-५०, श्रीतारा

स्तव मंजरी २-५०, श्रीभुवनेश्वरी स्तव मंजरी ३), श्रीकमला स्तव मंजरी २), श्रीदुर्गा स्तव मंजरी २॥), दकारादि श्रीदुर्गानाम साहस्रं)७५, सविधि आपदुद्धार बटुकभैरव स्तोत्र)७५, सविधि काली कर्पूर स्तवः १) चक्रपूजा के स्तोत्र १॥); आनन्दलहरी २।), सार्थ सौन्दर्यलहरी ५-५० ।

तन्त्र की प्राचीन दुर्लभ पुस्तकें

परातन्त्र २), मातृकाभेद तन्त्र २॥), निरुत्तर तन्त्र ३), ज्ञानसंकलिनी तंत्र १॥), तोडल तन्त्र, १॥), कुलार्णव तन्त्र ३॥, मन्त्रकोष २), काली तन्त्र २), श्रीभुवनेश्वरी रहस्य ३), कामधेनु तन्त्र २॥), नील तन्त्र २), निर्वाण तन्त्र २), परशुराम तन्त्र १), सांख्यायन तन्त्र ३), संक्षिप्तं तान्त्रिकमाह्निकं ४॥), श्री श्री विद्यार्णव तंत्र, प्रथम खण्ड (पूर्वार्द्ध) १५) ।

सभी धार्मिक व्यक्तियों के लिए उपयोगी

हिन्दुओं की पोथी ३), अक्षयवट ॥), वन्दे मातरम् २), वैदिक नवरात्र-पूजा-पद्धति १) ।

कल्याण मन्दिर, अलोपीबाग
मार्ग, प्रयाग----६